TITLE CODE : UPHIN49731

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

बसावन इंडिया

वर्ष : 2, अंक : 08 आजमगढ़ • फरवरी 2023 • मूल्य : ₹30

रामचरितमानस् पर रार...

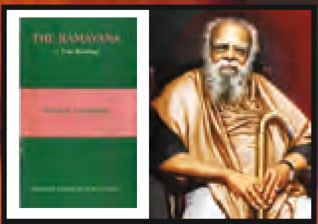

रामायण विरोध की क्रोनोलॉजी

रामचरित मानस के प्रचार के लिए, कांग्रेस

गीता प्रेस का गोरखधंधा

संपादकीय

जिस देश जाति में जनम लिया...

इस समय वर्ण, जाति और धर्म को लेकर भारी बहस चल रही है। संसद और विधानसभाओं में नहीं बल्कि गाँव में चाय की दुकानों पर, शादी-विवाह के कार्यक्रमों से लेकर चौक-चौराहों पर जहाँ भी लोग मिलते-जुलते हैं, उनके विमर्श का विषय जाति-धर्म और वर्ण खूब चर्चा और कभी-कभी तो गरमा-गरम बहस से तब्दील होकर मार-पीट तक नौबत आ जा रही है। सोशल मीडिया ने इसको और हवा दी है, लेकिन सबसे मौजूँ बात यह है कि देश के अखबार और संस्थानिक बहस विचार के केंद्र इस पर या तो एक तरफा है या चुप हैं।

अखबारों विशेष कर हिंदी के समाचार पत्र की खबरों में धर्म के मामले पर आगे हैं, लेकिन जाति के मामले में रिपोर्टिंग पर एक तरफा हैं। धर्म के मामले में आजकल हिंदू-मुसलमान की बात की जा रही है, जबकि पहले समुदाय विशेषता का नाम लेने और व्यक्तियों का नाम लेने से अखबार बचा करते थे। अखबार और टीवी कई बार इस रूप में सामने आते खुलकर दिखाई दे रहे हैं कि वे पूरे भारत नहीं बल्कि कुछ लोगों के हितों के साधक बन गए हैं। हाल में बाबाओं के चमत्कार और अंधविश्वास फैलाने वाले प्रवचनों और रामचरितमानस को लेकर उठे बवाल पर की गई एक तरफा रिपोर्टिंग से साबित होता है कि मीडिया में विविधता का अभाव है यानी कि केवल कुछ लोगों के ही हितों का साधन है। ज्यादातर अखबार, विशेष कर हिंदी अखबारों में धर्म-कर्म का पन्ना एक विशेष मान्यता वाले धर्म के इर्द-गिर्द घूमता है। राशिफल का कोई सिर पैर नहीं है लेकिन अखबारों में इसे खूब प्रकाशित करके, चासनी लगाकर परोसा जा रहा है, जिसके लिखने वाले एक ही वर्ण या जाति के लोग है। इस तरह की अतार्किक बातों को लोगों के बीच ले जाने को हतोत्साहित किया जाना चाहिए और वैज्ञानिक तार्किक सोच को बढ़ावा देने वाली बातें, तथ्य, लोगों के बीच ले जानी चाहिए। हो सके तो विधान बनाकर ऐसी चींजों के प्रकाशन पर रोक लगानी चाहिए।

इन सबके बीच महात्वपूर्ण यह है कि लोग जाति और वर्ण को लेकर अंदर-अंदर ज्वालामुखी की तरह भभक रहें है, शूद्र हैं, या नहीं, शूद्र कौन है? कौन जाति नीच है? कौन सबसे नीच है? इन सबके कारणों की तलाश में लगे है। जरुरत इस बात की थी कि अखबार और मीडिया मामले पर अफरमेटिव होते हुए, साकारात्मक विमर्श को आगे बढ़ाती। इसके बजाय मुख्यधारा की मीडिया इसमें जातिवादी राजनीति ढूंढने का प्रयास करती दिखती है, हद तो तब हो गई जब सोशल मीडिया पर यह चलने लगा कि संविधान आने के बाद जाति प्रमाण पत्र बने और इससे जाति व्यवस्था कायम होने लगी। संविधान लागू होने के बाद जाति व्यवस्था को खत्म करने के लिए आरक्षण और जाति-प्रमाण पत्र का ऐसा मजाक उड़ाने की निंदा होनी चाहिए। उससे भी बढ़कर अफरमेटिव एक्शन पर लेखन और अभिव्यक्ति भी अफरमेटिव होनी चाहिए।

आधुनिक काल के पहले लेखन ज्यादातर पुराणों, शास्त्रों आदि के हैं जो ज्यादातर जाति और वर्ण व्यवस्था के पक्षधर हैं। जाति-वर्ण के विरोध का भी लेखन और अभिव्यक्ति रही है, पर वह या तो गायब हो गई/ गायब कर दी गई, या नष्ट कर दी गई। लेकिन आज के इंटरनेट, जेनेटिक्स जैसे युग में अभिव्यक्ति और मौलिक, तार्किक, वैज्ञानिक लेखन को ज्यादा दिन रोका नहीं जा सकता। आने वाले दिनों में अभिव्यक्ति के खतरे उठाने वालों की संख्या बढ़ रही है। बड़ी संख्या में लोग पुरानी मान्यताएं, जातिवादी, वर्णवादी, महिला विरोधी मूल्यों को छोड़कर मानवतावादी समतामूलक विचारों के लिए आ खड़े होंगे। इसी उम्मीद के साथ यह अंक आपके समक्ष है।

नरेन्द्र

TITLE CODE : **UPHIN49731**

आज़मगढ़ (उ.प्र.) ▪ माह - फरवरी

सन् - 2023 ▪ वर्ष - 2 अंक - 08

बसावन इंडिया

संपादक
नरेन्द्र प्रताप
मो.: +91 94531 71770

सह-संपादक
डॉ. नरेश कुमार साहू
मो.: +91 99211 10844

प्रबंध संपादक
एड. देशराज (लखनऊ)
मो.: +91 9415767238

सह प्रबंध संपादक
अरविंद कुमार यादव

कंटेंट एडिटर
विक्रमजीत, बिनिका दुर्गम,
कमलेश यादव, मैत्रेयी सिंह

ब्यूरो प्रमुख
दिल्ली एनसीआर - परिभाषा
छत्तीसगढ़ - डॉ. जितेन्द्र सोनकर
मध्यप्रदेश - तेजबहादुर
महाराष्ट्र - अकाश खोब्रागड़े
राजस्थान - डॉ. कालूलाल कुलमी
प्रयागराज - धैर्य मित्र सिंह
कुशीनगर - कोमल प्रसाद
वाराणसी - विजय कुमार
बलिया - विनय कुमार
देवरिया - डॉ. सुनील कुमार
गोरखपुर - डॉ. विरेन्द्र कुमार
सरगुजा संभाग - कृष्णा पैकरा

विधिक सलाहकार
अमरजीत चक्रवर्ती - +91 94150 88452
रविशंकर यादव - +91 94159 48169

डिजाइन एंड ले-आउट
इरफान खान - +91 93299 60007

संपादकीय कार्यालय
31 शहीद द्वार, आजमगढ़,
उत्तर प्रदेश पिन- 276 001
Email : basavanindia@gmail.com
www.facebook//बसावन इंडिया
+91 9453171770

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी नरेन्द्र प्रताप द्वारा मेट्रो प्रिंटर्स, डी 102, महानगर एक्सटेंशन, लखनऊ, (उ.प्र.) से मुद्रित व शहीद द्वार सिविल लाइन, आजमगढ़ (उ.प्र.), पिन-276 001 से प्रकाशित

इस अंक की झलकियां

हंगामा क्यों बरपा है रामचरितमानस् को लेकर?	2
रामायण विरोध की क्रोनोलोजी	5
लोहिया और रामायण	10
गीता प्रेस का गोरखधंधा	11
योगी का 'सनातन धर्म'	13
अमरदेशवा, बेगमपुरा बनाम रामराज्य	14
राजनीति के कबीर थे शरद यादव	18
घटना चक्र	20
बस्ती : बौद्धों की बसावट	30
अमर शहीद जगदेव बाबू जयंती विशेष भारतीय क्रांति का जारी अध्याय	32
बच्चों के लिए बस्तर का परम्परागत चूसना	33

www.theforthstate.in
बसावन इंडिया के आर्टिकल्स द फोर्थ स्टेट डॉट इन पर भी पढ़े जा सकते हैं।

15 **नहीं रहा मंडल का लड़ाका माटी के लाल की अंतिम विदाई** - केवल इस बात का उल्लेख करना कि माननीय शरद यादव जी राजनीतिक रूप से..

24 **चमत्कारों की आंधी में सुहानी आई रे...** - अंधविश्वास, असुरक्षा और पाखंड का भारत में एक बहुत बड़ा बाजार है, जिसके फलने फूलने से देश में एक बड़े...

29 **बिहार में जाति जनगणना का पहला चरण समाप्त** - बिहार में भी सात जनवरी से जनगणना शुरू हो गई है, बिहार में जाति गणना...

34 **बदल रहे हैं शोक प्रकट करने के परंपरागत तरीके** - तेरहवीं की जगह श्रधांजलि सभा- उत्तर प्रदेश में सामाजिक बदलाव बहुत तेजी से...

इस अंक में प्रकाशित सामग्री के आंशिक या पूर्ण रुप से पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। लेखक के विचार व्यक्तिगत हैं। प्रकाशित सामग्री में दिए गए तथ्य संबंधी विवादों का पूर्ण दायित्व लेखक का है। संपादक, मुद्रक, प्रकाशक एवं सहयोगी संपादकीय टीम इसके लिए हरगिज उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान हेतु न्याय क्षेत्र आजमगढ़ होगा।

हंगामा क्यों बरपा हैं रामचरितमानस् को लेकर?

प्रो. चंद्रशेखर

स्वामी प्रसाद मौर्य

▪ नरेन्द्र प्रताप

राम, रामायण और पंडित तुलसीदास दूबे पर बिहार से शुरू हुआ विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है, बिहार के शिक्षा मंत्री चन्द्रशेखर के बयान के समर्थन में देश भर के बहुजन बुद्धिजीवी एक हो गए हैं और खुलकर इस बहस में हिस्सा ले रहे हैं। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता स्वामी प्रसाद मौर्य भी खुलकर सामने आ गए हैं इतना ही नहीं अन्य देश के अन्य दलित एवं पिछड़े नेता इस विवाद में खुल कर बोल रहे हैं। भाजपा की धर्म के नाम नाम पर ध्रुवीकरण की काट के रूप में विपक्षी दलों के पास 85% के ध्रुवीकरण का सुनहरा अवसर के रूप में देखा जा रहा है। बिहार में तेजस्वी यादव के बाद उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव ने जिस तरीके से तेवर दिखाए हैं लोगों द्वारा पसंद किया जा रहा है

विवाद कहां से शुरू हुआ

बिहार सरकार में शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने नालंदा विवि के एक कार्यक्रम में रामचरितमानस को नफरत फैलाने ग्रंथ वाला बताया था। उन्होंने कहा था कि ये देश को महान नहीं बनायेगा। मंत्री ने गोलवलकर की किताब बंच ऑफ थॉट्स को भी गलत ग्रंथ बताया था। ये ग्रंथ महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकता है। उन्होंने ये भी कहा कि इसमें एक खास जाति वर्ग और समुदाय को गाली

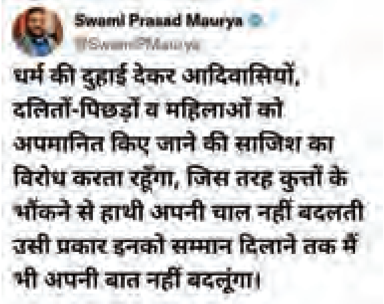
Swami Prasad Maurya
@SwamiPMaurya

धर्म की दुहाई देकर आदिवासियों, दलितों-पिछड़ों व महिलाओं को अपमानित किए जाने की साजिश का विरोध करता रहूँगा, जिस तरह कुत्तों के भौंकने से हाथी अपनी चाल नहीं बदलती उसी प्रकार इनको सम्मान दिलाने तक मैं भी अपनी बात नहीं बदलूंगा।

दी गई है। इस अँश का पहले भी प्रतिरोध हुआ है और आगे भी हम करेंगे। उन्होंने कहा था कि मनुस्मृति समाज में नफरत का बीज बोता है। उसके बाद रामचरितमानस नफरत फैलाता है।

उत्तर प्रदेश में बहुजन वैचारिकी के स्तम्भ स्वामी प्रसाद मौर्य ने हिंदू धार्मिक ग्रंथों की आलोचना के बाद उत्तर प्रदेश की राजनीति में भूचाल आ गया, हिंदू धर्म के ठेकेदारों द्वारा उनको जान से मारने तक के फतवे दिए, स्वामी प्रसाद मौर्य ने क्या कहा कि कई करोड़ लोग रामचरितमानस को नहीं

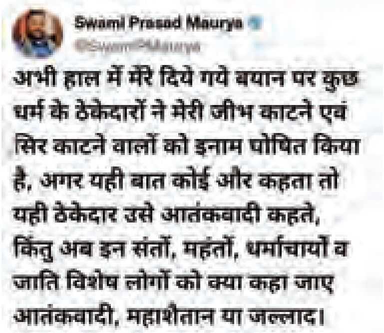
Swami Prasad Maurya
@SwamiPMaurya

अभी हाल में मेरे दिये गये बयान पर कुछ धर्म के ठेकेदारों ने मेरी जीभ काटने एवं सिर काटने वालों को इनाम घोषित किया है, अगर यही बात कोई और कहता तो यही ठेकेदार उसे आतंकवादी कहते, किंतु अब इन संतों, महंतों, धर्माचार्यों व जाति विशेष लोगों को क्या कहा जाए आतंकवादी, महाशैतान या जल्लाद।

चंद्रशेखर जी का संक्षिप्त परिचय

नाम- प्रो. चंद्रशेखर, उम्र - 61 वर्ष
शिक्षा - पोस्ट ग्रेजुएट (साइंस)

- 2015 में महागठबंधन के सरकार में पहली बार बने थे आपदा प्रबंधन मंत्री
- 03 बार लगातार विधायक बन मधेपुरा का कर रहे हैं नेतृत्व
- 2020 में जाप सुप्रीमो पप्पू यादव व जदयू प्रवक्ता निखिल मंडल को किया था परास्त
- 2010 में पहली बार राजद से विधायक बने थे प्रो.चंद्रशेखर

वर्ष 2010 में प्रो.चंद्रशेखर जदयू के रमेंद्र कुमार रवि को 11 हजार से अधिक मतों से हराकर पहली बार विधायक बने थे। दूसरी बार 2015 में उन्होंने भाजपा के विजय कुमार विमल को 37 हजार से अधिक मतों से पराजित किया था। इस बार उन्हें मंत्री बनाया गया था। 2020 में उन्होंने जदयू के निखिल मंडल को 15 हजार से अधिक मतों से पराजित कर विधायक बने। इस चुनाव में जाप सुप्रीमो सह पूर्व सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव भी चुनाव मैदान में थे। उन्हें भी शिकस्त का मूंह देखना पड़ा था।

Swami Prasad Maurya
@SwamiPMaurya

देश की महिलाओं, आदिवासियों, दलितों व पिछड़ो के सम्मान की बात करने से तथाकथित धर्म के ठेकेदारों को मिर्ची क्यों लग रही है। आखिर ये भी तो हिन्दू ही हैं। क्या अपमानित होने वाले 97% हिन्दुओं की भावनाओं पर अपमानित करने वाले 3% धर्माचार्यों की भावनायें ज्यादा मायने रखती हैं।

पढ़ते, सब बकवास है। यह तुलसीदास ने अपनी खुशी के लिए लिखा है। उन्होंने कहा था कि सरकार को इसका संज्ञान लेते हुए रामचरितमानस से आपत्तिजनक अंशों को बाहर करना चाहिए या इस पूरी पुस्तक को ही बैन कर देना चाहिए।

धार्मिक ग्रंथ में क्या क्या है

छुआछूत की भावना को भारत का संविधान अनुचित करार देता है और देश का कानून अस्पृश्यता को जुर्म करार देता है। लेकिन पंडित तुलसी दास की पुस्तक रामचरित मानस में केवट या मल्लाह को अस्पृश्य कहा गया है-

'लोक वेद सबही विधि नीचा, जासु छांह छुइ लेड्अ सींचा।

अर्थात् केंवट लोक और वेद में सभी प्रकार से नीच है और उसे छूकर आचमन करना चाहिए। इस प्रकार किसी जाति विशेष को सब प्रकार से नीचे और अस्पृश्य घोषित करने वाले ग्रन्थ के लेखक का सम्मान क्या भारत के संविधान का अपमान नहीं है।

आज भारत का संविधान किसी जाति को अधम या पापी कहना जुर्म मानता है। पंडित तुलसी दास ने अपने रामचरित मानस में कई जातियों को अधम और पापी कहा है-

जो वर्णाधम तेल कुम्हारा, श्वपच किरात कोल कलवारा।
आभीर, यवन, किरात, खस शवपचादि अति अघरूप जे।

अर्थात् तेली, कुम्हार, भंगी, बहेलिया, कोल, कलवार अधम वर्ण के लोग हैं ये पापी कौमें हैं। क्योंकि अहीर, मुसलमान, बहेलिया, खटिक, भंगी आदि को पापी कौम बताया गया है।

सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े लोग भारत में शूद्र की संज्ञा से भी पुकारे

> ब्राह्मणवादी ग्रन्थों में अच्छाई देखने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि स्वादिष्ट भोजन में यदि एक बूंद भी पोटेशियम साइनाइड महाविष की डाल दी जाए तो उसे कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं खायेगा। उस विष को हटाकर शेष भोजन खाने का तर्क न तो वांछनीय ही होगा और न ग्रहण करने योग्य, क्योंकि उसमें मरने की संभावना बनी रहेगी। यही हाल ब्राह्मणवादी साहित्य का है। इससे इन्सानियत निश्चय ही मर जाती है। जो ब्राह्मणवादी साहित्य ब्राह्मण की पूजा और शूद्र की पिटाई की वकालत करे उससे देश या मानवता का हित होना ऐसे ही असंभव है।
> (अर्जक संघ के संस्थापक रामस्वरुप वर्मा की पुस्तक ब्राम्हण महिमा क्यो और कैसे से)

जाते हैं जिन्हें पण्डित तुलसीदास ने अपने रामचरित मानस में पशुओं या निर्जीव की कोटि में रखते हुए सुझाव दिया है-

ढोल गँवार सूद्र पसु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।

यानी कहाँ तो ढोल और पशु और कहाँ शूद्र और नारी इनको समान कोटि में रखकर अकारण पिटाई करने का अधिकार सवर्णों के हाथ में देता है

'भारत का संविधान' सरकारी नौकरियों में, अदालत या अन्य किसी सार्वजनिक स्थान या कार्य में जाति, लिंग, धर्म आदि के आधार पर कोई भेद भाव नहीं किया जायेगा किन्तु पंडित तुलसीदास अपने रामचरित मानस में यह व्यवस्था देते हैं-

पूजिय विप्र सकल गुण हीना, शूद्र न गुणगण, ज्ञान प्रवीना ।

अर्थात् सारे गुणों से रहित होने पर भी ब्राह्मण की पूजा करो और अनेक गुणों से युक्त चुनाव लोग ज्ञानी और प्रवीण शूद्र की कभी भी पूजा मत करो एक अन्य स्थान पर पंडित तुलसीदास ब्राहमणों को विशेष स्थान देते हुए कहते है कि -

शापत ताड़त परूष कहंता, विप्र पूज्य अस गावहि सन्ता ।

ब्राह्मण चाहे शाप दे, मारे या गाली दे फिर भी उनकी पूजा ही की जानी चाहिए शूद्र और स्त्री को तो अपनी मौज या गुस्सा उतारने के लिए जब चाहो तब पीटो लेकिन बदतमीज और कानून शिकनी करने वाले ब्राह्मण की पूजा करो।

'भारत का संविधान' अनिवार्य शिक्षा लागू करने का संकल्प लेता है। पंडित तुलसी दास शूद्र को शिक्षा देना ऐसा ही समझते हैं जैसे साँप को दूध पिलाना। यानी शूद्र साँप है और शिक्षा दूध। जनश्रुति के अनुसार साँप को दूध पिलाने से वह अधिक विषैला हो जाता है। उसी प्रकार पंडित तुलसीदास के अनुसार शूद्र विद्या पाने से अधिक खतरनाक हो जाता है रामचरित मानस के काकभुसुंडि गरूड़ संवाद में काकभुसुंडि पूर्वजन्म में शूद्र होने की बात कहते हुए कहता है-

अधम जाति मैं विद्या पाए,
भयउँ यथा अहि दूध पिलाये।

रामचरित मानस में महिलाएं

पंडित तुलसीदास का महाग्रन्थ महिलाओं को अकारण पीटने अनपढ़ रखने और तिरस्कार करने का फतवा देता है। नारी को पशु की श्रेणी में रखकर गुस्सा आने पर उसकी पिटाई करने का फतवा ऊपर पंडित तुलसीदास दे ही चुके हैं। वे नारी स्वतंत्रता के भी प्रबल विरोधी हैं।

महावृष्टि चलि फूटि कियारी,
जिमि स्वतंत्र होइ विगरहि नारी।

जैसे अत्यंत वर्षा से खेतों की मेंड़े फूट जाती है ऐसे ही स्वतंत्र होकर स्त्री भी बिगड़ जाती है।

तुलसीदास ने रामचरित मानस में राम के मुख से उपर्युक्त फतवा दिलाकर नारी की स्वतंत्रता समाप्त करने की राह बनायी-

राखिय नारि यदपि उर माँही,
युवती शास्त्र नृपत वश नाहीं ।

ऐसे स्त्री जाति के प्रति संशय की भावना पनपाई और अन्त में यहाँ तक कह दिया

एक मूल बहु शूल प्रद प्रमदा सब दु:ख खानि ।

यानी नारी अनेक दुखों को देने का एक मात्र मूल कारण है।

पण्डित तुलसी दास ने स्त्री के धर्म के गूढ़ विषय को जानने के अयोग्य बताया है

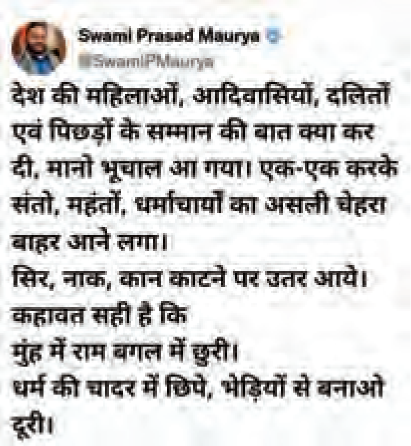
Swami Prasad Maurya
@SwamiPMaurya
देश की महिलाओं, आदिवासियों, दलितों एवं पिछड़ों के सम्मान की बात क्या कर दी, मानो भूचाल आ गया। एक-एक करके संतो, महंतों, धर्माचार्यों का असली चेहरा बाहर आने लगा।
सिर, नाक, कान काटने पर उतर आये।
कहावत सही है कि
मुंह में राम बगल में छुरी।
धर्म की चादर में छिपे, भेड़ियों से बनाओ दूरी।

और यह बात पार्वती के मुँह से स्वयं कहलाई है-

प्रह यदपि योषिता अन अधिकारी,
दासी मन क्रम वचन तुम्हारी
अब मोहि आपनि किंकरि जानी
केल जदपि सहज जड़ नारि अयानी

अर्थात् यद्यपि स्त्री तत्व जानने की अधिकारी नहीं है क्योंकि वह स्वभाव से ही मूर्ख और अज्ञानी होती है। किन्तु मैं आपकी मन वचन औरा कर्म से दासी हूँ इसलिए आप इस तत्व को बता दें। स्त्री को अत्यन्त कामुक चित्रित करने से भी पण्डित तुलसीदास नहीं चूके।

यथा- भ्राता पिता पुत्र उरगारी,
पुरुष मनोहर निरखत नारी।
होहिं विकल सक मनहिं न रोकी,
जिमि रविमणि द्रव रविहिं बिलोकी

अर्थात् भाई, पिता, पुत्र कोई भी पुरुष हो स्त्री तो उसमें मनोहरता देखती है और मनोहर पुरुष पाने पर इतनी व्याकुल हो जाती है कि फिर वह मन को ऐसे ही नहीं रोक पाती है जैसे सूर्य को देखकर सूर्यमणि अपने आप रसने लगती है। यद्यपि पण्डित तुलसीदास यह जानते रहे होंगे कि बलात्कार तो पुरुष ही करते हैं फिर स्त्री के मत्थे सारी कामुकता का दोष मढ़ना कहाँ की निष्पक्षता है।

सत्य कहिहिं कवि नारि स्वभाऊ
सब विधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबम्ब मुकुर गहि जाई,
विधिहु न नारि हृदय गति जानी,
जानि न जाय नारि गति भाई।
सकल कपट अघ अवगुन खानी ।

अर्थात् कवि लोग सच ही कहते हैं कि स्त्री का स्वभाव सब प्रकार से अगम, अथाह और विस्तृत है। चाहे कोई अपनी छाया शीशे में पकड़ ले, लेकिन स्त्री की राय की जानकारी करना फिर भी असंभव है। ब्रह्म ने भी स्त्री के हृदय की गति नहीं जान पाई क्योंकि वह सारे कपट, पाप और अवगुणों की खान हैः इतना कहने के बाद यह भी कहा कि स्त्रियों के मन में आठ अवगुण सदैव रहते है यानी साहस, झूठ बोलना, चपलता, हिपोक्रेसी, भय, अविवेक, अशुद्धता और निर्दयता-

नारि स्वभाव सत्य कवि कहई,
अवगुण आठ सदा उर रहई
साहस, अनृत, चपलता, माया,
भय अविवेक असींच अदाया।

रामचरित मानस के नायक श्री राम के मुंह से नारी को अनेक शूलप्रद और सब दुखों की खानि का मूल कारण कहलवाया है और उसे दूर रखने को कहा है। वही राम यहाँ तक कह देते हैं कि स्त्री को चाहे हृदय में क्यों न रखो लेकिन युवती, शास्त्र और राजा कभी वश में नहीं होते।

एक मूल बहु शूलप्रद, प्रमदा सब दुख खानि। राखिय र यद्यपि उर माँही,
युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं ।

एक नजर इधर भी ...

डॉ संजय निषाद
अध्यक्ष, निषाद पार्टी

डॉ संजय निषाद का बयान भाजपा की सहयोगी निषाद पार्टी के अध्यक्ष डॉक्टर संजय निषाद ने भी राम को लेकर विवादित बयां दे चुके हैं हालांकि बाद में उन्होंने इसको लेकर सफाई भी दी। संजय निषाद ने कहा था कि भगवान राम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र नहीं थे, बल्कि वो पुत्रेष्टि यज्ञ कराने वाले श्रृंगी ऋषि के बेटे थे. संजय निषाद का कहना है कि भगवान राम को राजा दशरथ का तथाकथित पुत्र कहा जा सकता है, लेकिन वो वास्तविक बेटे नहीं थे।

संजय निषाद के मुताबिक राजा दशरथ को जब कोई संतान नहीं हो रही थी तो उन्होंने श्रृंगी ऋषि से यज्ञ कराया था। ये यज्ञ सिर्फ कहने के लिए ही था। कहा जाता है कि श्रृंगी ऋषि द्वारा खीर दिए जाने से राजा दशरथ की तीनों रानियों के पुत्र पैदा हुए थे, जबकि हकीकत ये है कि खीर खाने से कोई भी महिला गर्भवती नहीं हो सकती।

कौन कौन समर्थन में "मैं भी शूद्र"

जौनपुर जिले के मड़ियाहूं के पूर्व ब्लाक प्रमुख लाल प्रताप यादव तो बाकायदा 'मैं भी शूद्र' का अभियान छेड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त शूद्र शिव शंकर यादव ने तो इस पर चार किताबों का प्रकाशन भी कर दिया है उनकी पुस्तक 'गर्व से कहो हम शूद्र हैं' और 'ब्राहमणवाद का विकल्प शूद्रवाद' इस अभियान का सफलता पूर्वक नेतृत्व कर रहीं हैं। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के विधायक एंव पूर्व सांसद रमाकांत यादव ने दो वर्ष पूर्व रक्षा सूत्र को कटवा कर अपने लिए 'शूद्र' शब्द का प्रयोग किया। हाल ही में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव द्वारा खुद को शूद्र कहे जाने के बाद लोगों ने मैं भी शूद्र हूँ की बाकायदा पोस्टर और बैनर भी लगा दिया। लखनऊ में तो बाकायदा लोगों ने राम चरित मानस की सांकेतिक प्रतियों का दहन किया।

रामायण विरोध की क्रोनोलॉजी

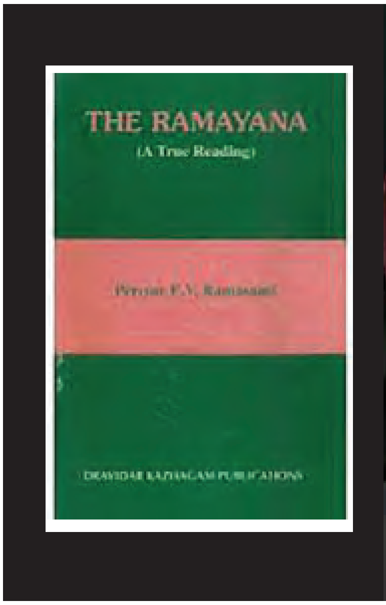

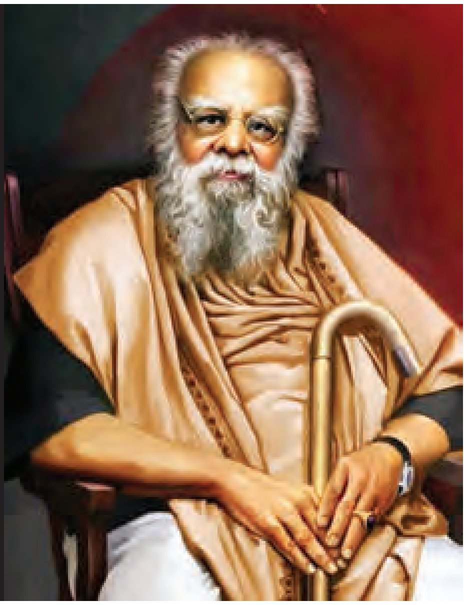

▪ **नरेन्द्र प्रताप**

बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर के रामचरितमानस विरोध के बाद हिंदी पट्टी में ब्राह्मणवादी ग्रंथों के खिलाफ उबाल सा आ गया। रामायण का पहली बार विरोध भारत के दक्षिणी राज्य तमिलनाडु में किया गया। एशिया के सुकरात महान दार्शनिक और चिंतक ई.वी. रामासामी 'पेरियार' नें हिंदुओं के उन ग्रंथों को प्रतीकात्मक तौर पर जलाने का आह्वान किया था, जो ग्रंथ अनार्यों को आर्यों की तुलना में 'नीच' ठहराते हैं। गैर-ब्राह्मणों पर ब्राह्मणों की और महिलाओं पर पुरूषों की सर्वोच्चता को स्थापित करते हैं और गैर-ब्राह्मणों और महिलाओं को नीचा दिखाते हैं। जिन किताबों को उन्होंने जलाने का आह्वान किया था, उसमें मनुस्मृति और रामायण शामिल थीं। ई.वी. रामासामी 'पेरियार' ने अपनी पुस्तक 'रामायण : अ ट्रू रीडिंग' लिख कर रामायण का सांस्कृतिक विरोध किया था। पेरियार बीसवीं सदी के तमिलनाडु के एक प्रमुख राजनेता व दलित शोषित, गरीबों के मसीहा थे। इन्होंने जस्टिस पार्टी का गठन किया जिसका सिद्धान्त जातिवादी व गैर बराबरी वाले हिंदुत्व का विरोध था। विचारों से उन्हें क्रांतिकारी और तर्कवादी माना जाता था। वह एक धार्मिक हिंदू परिवार में पैदा हुए, लेकिन ब्राह्मणवाद के घनघोर विरोधी रहें। उन्होंने न केवल ब्राह्मण ग्रंथों की होली जलाई बल्कि रावण को अपना नायक भी माना।

ई.वी. रामासामी 'पेरियार' को उत्तर भारत (खासकर हिंदी बेल्ट) में लाने का काम ललई सिंह यादव ने किया। उत्तर भारत के पेरियार कहे जाने वाले ललई सिंह यादव ने ई.वी. रामासामी के विचारों को उत्तर भारत में प्रचारित किया। उन्होंने पेरियार की पुस्तक 'रामायण : अ ट्रू रीडिंग' का "सच्ची रामायण" के नाम से अनुवाद किया। पेरियार की किताब 'रामायण : अ ट्रू रीडिंग' का हिंदी अनुवाद 1970 के दशक में ललई सिंह यादव द्वारा प्रकाशित होते ही सनसनी फैल गई थी। अपने 'आराध्य' की सच्चाई सामने आते ही द्विज घबरा उठे। यहां तक कि तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने बिना कारण बताए ही किताब पर प्रतिबंध लगा दिया। दिसंबर, 1969 में तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने ई.वी. रामासामी पेरियार की पुस्तक 'रामायण : अ ट्रू रीडिंग' की अंग्रेज़ी और हिंदी प्रतियों को ज़ब्त करने का आदेश दिया था। लंबी कानूनी लड़ाई के बाद ललई सिंह यादव को सफलता मिली और किताब हिंदी पाठकों को उपलब्ध हो सकी। एडवोकेट बनवारी लाल यादव ने 'सच्ची रामायण' के पक्ष में जबरदस्त पैरवी की। फलतः 19 जनवरी 1971 को जस्टिस ए. कीर्ति ने जब्ती का आदेश निरस्त करते हुए सरकार को निर्देश दिया कि वह सभी जब्तशुदा पुस्तकें वापिस करे और अपीलान्ट ललई सिंह को तीन सौ रुपए खर्च दे। नायकर जी ने 'दि रामायनाः ए ट्रू रीडिंग' में अपने विचार के समर्थन में सन्दर्भ नहीं दिए थे। उस अभाव को पूरा करने के लिए ललई सिंह ने 'सच्ची रामायण की चाबी' किताब लिखी,जिसमें उन्होंने वे तमाम साक्ष्य और हवाले दिए, जो 'सच्ची रामायण' को समझने के लिए जरूरी थे।

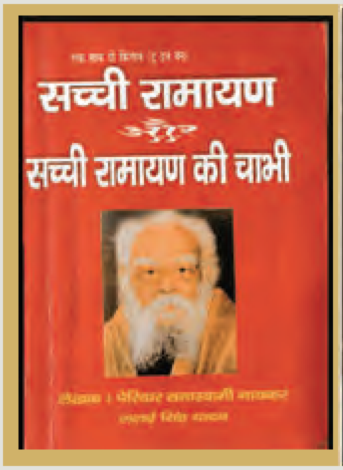

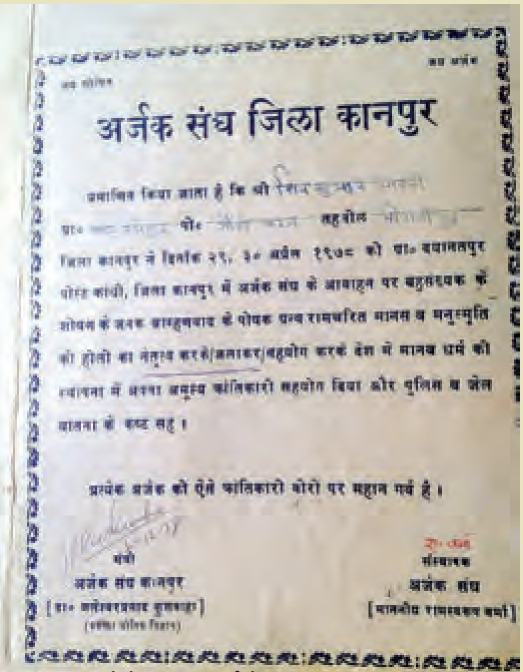
अर्जक संघ जिला कानपुर

प्रमाणित किया जाता है कि श्री [illegible] ग्रा० [illegible] पो० [illegible] तहसील [illegible] जिला कानपुर ने दिनांक २९, ३० अप्रैल १९७८ को ग्रा० दयालनपुर पोस्ट कांधी, जिला कानपुर में अर्जक संघ के आवाहन पर बहुसंख्यक के शोषण के जनक ब्राह्मणवाद के पोषक ग्रन्थ रामचरित मानस व मनुस्मृति की होली का नेतृत्व करके/जलाकर/सहयोग करके देश में मानव धर्म की स्थापना में अपना अमूल्य क्रांतिकारी सहयोग किया और पुलिस व जेल यातना के कष्ट सहे।

प्रत्येक अर्जक को ऐसे क्रांतिकारी वीरों पर महान गर्व है।

मंत्री
अर्जक संघ कानपुर
[डा० [illegible]]

संस्थापक
अर्जक संघ
[माननीय रामस्वरूप वर्मा]

साभार – फोटोग्राफ फारवर्ड प्रेस

'रामचरितमानस' को हिंदी पट्टी में जलाने की शुरूआत अर्जक संघ ने की थी, जिसकी स्थापना 1 जून, 1968 को रामस्वरूप वर्मा ने की थी। जिसके साथ महाराज सिंह भारती और जगदेव प्रसाद सक्रिय तौर पर जुड़े थे और पेरियार ललई सिंह यादव भी उसमें सक्रिय हिस्सेदारी करते थे। अर्जक संघ के आह्वान पर 30 अप्रैल, 1978 को पहली बार 'रामचरितमानस' और 'मनुस्मृति' को कानपुर जिले (वर्तमान में कानपुर देहात) के दयानकपुर कांधी गांव में जलाया गया था। रामचरितमानस' और 'मनुस्मृति' जलाने के चलते अर्जक संघ के अनेक कार्यकर्ताओं-नेताओं को पुलिस की लाठियां खानी पड़ीं और जेल जाना पड़ा।

चौधरी लौटन राम निषाद
कांग्रेस नेता

राजनीतिक स्तर पर मामले ने थोड़ा तूल पकड़ा जब चौधरी लौटन राम निषाद को अगस्त 2020 में समाजवादी पार्टी के पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ से अध्यक्ष पद से हटा दिया गया। चौधरी लौटन राम निषाद ने अपने अयोध्या प्रवास के दौरान हिंदू देवी देवताओं में विश्वास नहीं किये जाने की बात की थी उन्होंने कहा, 'अयोध्या में राम मंदिर बने या कृष्ण मंदिर, उससे मुझे कोई लेना देना नहीं है। भगवन राम में मेरी आस्था नहीं है। वे काल्पनिक और फिल्मी पात्र हैं। मेरी आस्था उनमें है जिनकी वजह से मुझे सीधा लाभ मिला। बाबा साहब डॉ.भीमराव अंबेडकर, कर्पूरी ठाकुर, महात्मा ज्योतिबा फुले और छत्रपति साहू जी महराज ने पिछड़ा वर्ग को उनका अधिकार दिया। मेरी आस्था इन महापुरुषों में है।'

क्या पिछड़ों में आए भूचाल से भरभरा उठेगा हिंदुत्व का किला?

रमाकांत यादव
विधायक एवं पूर्व सांसद

उत्तर प्रदेश में व्यक्तिगत स्तर पर रामचरित मानस और अन्य धार्मिक आडम्बरों के विरोध समय समय पर होते रहे। आजमगढ़ के पूर्व सांसद तथा फुलपुर पवई से वर्तमान विधायक रमाकांत यादव ने रक्षासूत्र कटवा कर और मै भी शूद्र हूँ कह कर बहुत सुर्खियाँ बटोरी लेकिन दो चार दिनों के बाद मामला ठंढा पड गया।

शूद्र लाल प्रताप यादव
पूर्व ब्लाक प्रमुख मड़ियाहूँ

जौनपुर से मड़ियाहूं के पूर्व ब्लाक प्रमुख लाल प्रताप यादव तो मैं भी शूद्र हूँ का बाकायदा अभियान छेड़े हुए हैं उन्होंने अपने नाम के पहले शूद्र विशेषण ही लगा रखा है।

आग सुलग रही थी बस धधकना बाकी था, जो बिहार के शिक्षा मंत्री डॉ. चन्द्रशेखर के एक बयान से धधक उठी फिर क्या था, उनके एक बयान के बाद तो बयानों की झड़ी लग गई।

गडरिया संस्कृति ने ब्राह्मण संस्कृति के प्रभाव को स्वीकार नहीं किया और किसी हद तक, न अपना हिंदूकरण) होने दिया। भविष्य में हिंदू धर्म रहेगा या खत्म हो जाएगा, इसमें ऐतिहासिक शूद्रों में से यादव समुदाय की भूमिका निर्णायक रहेगी। बीते तमाम वर्षों में ब्राह्मणों का वर्चस्व और अन्धविश्वासी हिंदू धर्म बचा ही इसलिए रहा है कि ब्राह्मण इस समुदाय को अपढ़ और अपनी महानता से अनजान बनाए रखने में सफल रहे हैं। जैसे ही भारत-भर के यादव शिक्षित हुए और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपनी सांस्कृतिक महानता को देख पाने में सक्षम हुए, ब्राह्मणवाद का हश्र वही होगा जो ताश के पत्तों के घर का होता है।

लखनऊ में ओबीसी महासभा द्वारा रामचरितमानस् की सांकेतिक प्रतियां जलाते हुए।

अखिलेश यादव
पूर्व मुख्यमंत्री उ.प्र.

उत्तर प्रदेश में पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्या ने भी रामचरित मानस के खिलाफ जमकर बयानबाजी की उनके समर्थन में उतरे समाजवादी पार्टी के मुखिया पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को भी शूद्र होने का एहसास हो गया हालाँकि 2017 में सत्ता परिवर्तन के पश्चात् मुख्यमंत्री पद से उतरने के बाद से ही उनकी कुर्सी और आवास को गंगाजल से धुलवाकर उन्हें शूद्र होने का एहसास करवाया जा रहा था लेकिन वो मानने को तैयार न थे, लेकिन एक प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने जिस प्रकार से मै भी शूद्र हूँ का उदघोष करते हुए पत्रकार से कहा ब्राम्हण धर्म के ठेकेदारों के लिए चिंता का विषय है।

विख्यात सामाजिक चिंतक प्रो. कांचा इलैया शेफर्ड का ऐतिहासिक रूप से महान शूद्रों के बारे में क्या मानना है कि गडरिया संस्कृति ने ब्राह्मण संस्कृति के प्रभाव को स्वीकार नहीं किया और किसी हद तक, न अपना हिंदूकरण) होने दिया। भविष्य में हिंदू धर्म रहेगा या खत्म हो जाएगा, इसमें ऐतिहासिक शूद्रों में से यादव समुदाय की भूमिका निर्णायक रहेगी। बीते तमाम वर्षों में ब्राह्मणों का वर्चस्व और अन्धविश्वासी हिंदू धर्म बचा ही इसलिए रहा है कि ब्राह्मण इस समुदाय को अपढ़ और अपनी महानता से अनजान बनाए रखने में सफल रहे हैं। जैसे ही भारत-भर के यादव शिक्षित हुए और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपनी सांस्कृतिक महानता को देख पाने में सक्षम हुए, ब्राह्मणवाद का हश्र वही होगा जो ताश के पत्तों के घर का होता है। ▪

सोशल मीडिया में मचा घमासान

अखिलेश यादव के शूद्र कहने भर की देर थी कि लोग जम कर अपनी भड़ास निकालने लगे। कई स्थानों पर बड़ी बड़ी होर्डिंग्स लग गयी। जगह जगह पोस्टर वार शुरू हो गए।

वरिष्ठ दलित कवि सुदेश कुमार तनवर की कविता 'मैं हैरान हूं' सोशल मीडिया में वायरल होने लगी। सुदेश तनवर की यह कविता विमल थोराट एवं सूरज बड़त्या द्वारा संपादित पुस्तक 'भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर' में संकलित है।

मैं हैरान हूं

मैं हैरान हूं यह सोचकर,
किसी औरत ने क्यों नहीं उठाई उंगली ?
तुलसी दास पर, जिसने कहा,
"ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी।

मैं हैरान हूं,
किसी औरत ने
क्यों नहीं जलाई "मनुस्मृति"
जिसने पहनाई उन्हें
गुलामी की बेड़ियां ?

मैं हैरान हूं,
किसी औरत ने क्यों नहीं धिक्कारा ?
उस "राम" को
जिसने गर्भवती पत्नी सीता को,
परीक्षा के बाद भी
निकाल दिया घर से बाहर
धक्के मार कर ।

कवि सुदेश कुमार तनवर

पोस्टर वार

सपा नेता पूर्व जिला सचिव लालजी पटेल का एक वीडियो क्लिप वायरल हो रहा है जिसमें लोगों से रामचरितमानस को जलाने की अपील की गई है। इस वीडियो में लालजी पटेल कहा रहे है कि "हम स्वामी प्रसाद मौर्य की बातों का समर्थन करते हैं हम सनातन धर्म के लोग हैं, और यह किताब हिंदू धर्म का रामचरितमानस कोई ग्रंथ नहीं है। यह सिर्फ एक किताब है जिसको तुलसी दास ने अपने मन से लिखा है, अपने को प्रसिद्ध करने के लिए लिखा है। यह किताब दलितों और पिछड़ों को अपमानित करती है। इसलिए जिस प्रकार सुंग वंश की स्थापना होने के बाद बौद्ध धर्म ग्रंथों को होलिका दहन में जलाया गया था, उसी प्रकार से इस किताब को जला दिया जाएगा तो हमें इस किताब से मुक्ति मिल जाएगी और अपमानित तथा भेदभाव से छुटकारा मिल जाएगा."

राष्ट्रपति पं.वीवी गिरी के साथ प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी

रामचरित मानस के प्रचार के लिए, कांग्रेस

▪ **नरेन्द्र प्रताप / अग्निश देव**

अक्सर हम भूल कर बैठते है कि जो दिख रहा है वही सत्य है लेकिन सत्य दिखने से इतर भी हो सकता है, ज्यादातर लोगों को लगता है कि तुलसीदास की रामचरितमानस को घर-घर तक पहुंचाने का काम भाजपा या आरएसएस का है, जबकि ऐसा नहीं है। तुलसीदास की रामचरित मानस जन-जन तक कांग्रेस के समय में पहुंची। कांग्रेस के ही शासन काल में रामचरितमानस को स्कूलों और कालेजों के सिलेबस में शामिल किया गया। 1990 के दशक में रामानंद सागर की रामायण का प्रसारण दूरदर्शन पर किया गया जो कोरोना कल में पुनः प्रसारित किया गया।

इंदिरा गाँधी ने रामचरित मानस (रामायण) का प्रचार प्रसार बढ़ाने का कार्यक्रम 'राम चरित

आज सारे देश में रामचरितमानस् चतुश्शताब्दी समारोह समिति रामचरितमानस् के प्रचार में लगी है। इस समिति की अध्यक्षा प्रधानमंत्री माननीय इन्दिरा गांधी और संरक्षक राष्ट्रपति माननीय बराह वेंकट गिरि हैं। इस सम्मेलन की राय में पंडित तुलसीदास कृत रामचरित मानत घोर साम्प्रदायिक एवं ब्राह्मणवादी ग्रंथ है। जिसमें स्त्रियों, शूद्रों एवं यनों (मुसलमान, ईसाई आदि) को अधम और पापी बताया गया है और इन्हें ताड़ना का अधिकारी कहकर इसका घोर अपमान किया गया है। भारत के बहुसंख्यक वर्ग का अपमान करने वाले ऐसे ग्रंथ को सरकार चलाए और बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर की किताब को जब्त करे, इससे अधिक विडम्बना और क्या हो सकती है। - स्रोत-रामस्वरूप वर्मा समग्र (भाग-2)

मूर्ति पर माला विचारों में ताला – भारत भूमि आज महामानव बुद्ध की मूर्तियों से पटी पड़ी है। किन्तु उनका सद्धर्म भारत से गायब हो गया जब कि हजरत मुहम्मद साहब या खुदा की एक भी मूर्ति दुनिया में न होने के बावजूद इस्लाम अब भी कुरान शरीफ में सुरक्षित है और उसी के विचार को मानने वाले मुसलमान कहे जाते हैं। कोई भी मानववादी इंसान मूर्ति पूजक नहीं हो सकता वह तो महामानवों के मानववादी समतापरक विचारों का ही पूजक होता है यानी उन्हीं विचारों को मानकर उन पर आचरण करता है। इसके विपरीत महामना बुद्ध या महामना डॉ. आंबेडकर की मूर्तियों को भगवान कह कर पूजा करने वाले न तो उनकी बोलने-चालने, उठने-बैठने और खान-पान की छः मानवीय समताओं को मानते और आचरण करते हैं न जो बात या काम अपने को बुरा लगे उसे दूसरे के साथ न करो के सिद्धांत पर आधारित मानव मैत्री को ही स्वीकार करते हैं। इसी कारण यह कहा जाने लगा कि मूर्ति पूजक पाखण्डी होता है।

"70 के दशक के पहले रामचरितमानस को बहुत कम लोग जानते थे। उस समय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी राम मनोहर लोहिया कमलापति त्रिपाठी, श्रीपति मिश्रा जैसे लोगों ने राजनीतिक तरीके से करोड़ों रुपए की फंडिंग की और साथ ही साथ कांग्रेस पार्टी के निचले प्रतिनिधियों जिसमें ब्राह्मण और क्षत्रियों का बोलबाला था उन लोगों को रामचरितमानस का घर-घर पाठ कराने के लिए प्रेरित किया। 80 के दशक तक आते-आते पिछड़ी जातियों विशेषकर अहीर, कुर्मी, केवट, मौर्या आदि लोगों के यहां रामचरितमानस विशेषकर सुंदरकांड का पाठ घर-घर होने लगा। उनके गृह प्रवेश कोई भी घर का शुभ कार्य हो, नया कार्य के दौरान रामचरितमानस का पाठ कराया जाना शुभ माने जाने लगा और धीरे-धीरे लोगों। घर-घर में गीता प्रेस की किताबें पहुंच गई। रामचरितमानस का प्रचार प्रसार ब्राह्मण बनिया की जो वर्चस्व आदि व्यवस्था है उसको कायम रखने का एक प्रयास रहा है इंदिरा गांधी राम मनोहर लोहिया श्रीपत मिश्रा कमलापति त्रिपाठी आदि आदि इस तरह के लोग सत्तर के दशक में जिस तरह से प्रचार किए और गीता प्रेस गोरखपुर की किताबें उसको कहां से फंडिंग हुई कि इतने अच्छे-अच्छे कागज पर 4 रुपए में वह गीता जिसका मूल्य 20 रुपए है, में रामाचरितमानस भेजता है कहां से उसकी लागत की भरपाई हो रही है यह जांच का विषय होना चाहिए लेकिन वह जगह जगह सबके घर घर पहुंचाया गया और धीरे-धीरे लोग कभी शिक्षा के अधिकारी कभी ताडन के अधिकारी सुविधा अनुसार बनते रहेंगे"।

डॉ. विक्रम
इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

टीवी पर रामायण का प्रसारण

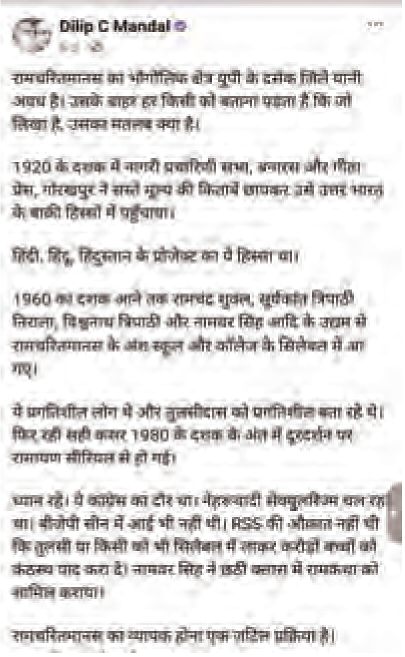
Dilip C Mandal

रामचरितमानस का भौगोलिक क्षेत्र यूपी के दसेक जिले यानी अवध है। उसके बाहर हर किसी को बताना पड़ता है कि जो लिखा है, उसका मतलब क्या है।

1920 के दशक में नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस और गीता प्रेस, गोरखपुर ने सस्ते मूल्य की किताबें छापकर उसे उत्तर भारत के बाकी हिस्सों में पहुँचाया।

हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान के प्रोजेक्ट का ये हिस्सा था।

1960 का दशक आने तक रामचंद्र शुक्ल, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, विश्वनाथ त्रिपाठी और नामवर सिंह आदि के उद्यम से रामचरितमानस के अंश स्कूल और कॉलेज के सिलेबस में आ गए।

ये प्रगतिशील लोग थे और तुलसीदास को प्रगतिशील बता रहे थे। फिर रही सही कसर 1980 के दशक के अंत में दूरदर्शन पर रामायण सीरियल से हो गई।

ध्यान रहे। ये कांग्रेस का दौर था। नेहरूवादी सेक्युलरिज्म चल रहा था। बीजेपी सीन में आई भी नहीं थी। RSS की औकात नहीं थी कि तुलसी या किसी को भी सिलेबस में लाकर करोड़ों बच्चों को कंठस्थ याद करा दे। नामवर सिंह ने छठी क्लास में रामकथा को शामिल कराया।

रामचरितमानस का व्यापक होना एक जटिल प्रक्रिया है।

मानस चतुश्शताब्दी समारोह समिति' बनाकर किया। सन 1970 में जिसकी अध्यक्षता माननीय इन्दिरा गांधी और संरक्षक तत्कालीन राष्ट्रपति पंडित बराह वेंकट गिरि थे। इस पर केन्द्रीय सरकार ने एक करोड़ से अधिक रुपया खर्च किया और वे सभी साधन राम चरित मानस (रामायण) के प्रचार व प्रसार में अपनाए, जो उस समय संभव हो सके।

- **छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार मानस मंडली प्रोत्साहन योजना 2021**

छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार राज्य स्तरीय मानस मंडली प्रतियोगिता कराने जा रही है जिससे वर्तमान समय में इस विषय पर चर्चा ज्यादा प्रासंगिक हो गयी है। भारत का बहुजन समाज आर.एस.एस और बीजेपी के ब्राह्मण वाद को तो किसी हद तक समझ जाता है लेकिन कांग्रेस के महीन ब्राह्मणवाद को ना समझने की भूल कर बैठता है। हाल ही में छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार ने बताया कि वो राज्य स्तर पर एक मानस मंडली प्रतियोगिता कराने जा रही है। इसे मानस मंडली प्रोत्साहन योजना 2021 नाम दिया गया है। इसके अंतर्गत ग्राम पंचायत, ब्लॉक और जिला स्तर के साथ-साथ राज्य स्तर पर रामायण गायन प्रतियोगिता होगी। साथ ही ग्राम पंचायत स्तर के विजेता को 5 हजार, ब्लॉक स्तर के विजेता को 10 हजार और जिला स्तर के विजेता को 50 हजार रुपये दिए जायेंगे। इसके अलावा राज्य स्तर में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को 5 लाख रूपये, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को 3 लाख रुपये और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को 2 लाख रुपये दिए जायेंगे।

सामाजिक चिंतक राधे श्याम गौतम का कहना है कि “कांग्रेस के लिए ये कोई नई बात नहीं है, कांग्रेस हमेशा से बहुजन समाज के साथ इस तरह की महीन ब्राह्मणवादी दाव पेंच करती रही है। सन 1970 में भी इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकर ने उत्तर प्रदेश में सरकारी बजट से एक करोड़ से अधिक रुपया राम चरित मानस के प्रचार प्रसार के लिए खर्च करने का फैसला लिया था जिसका परिणाम आप सबके सामने है। इस तरह के योजनाओं से समाज

छ.ग. में मानस मण्डली रामचरितमानस् का गायन करते हुए

छ.ग. में राम को स्थापित करती हुए कांग्रेस

का ना कभी भला हुआ है ना ही कभी भला होगा यदि अछूतों का कल्याण गीता, भगवत और रामायण पढ़ने से होता तो हजारों वर्षों से वे घोर नरकीय जीवन क्यों बिताते? इससे समाज पिछड़ेपन के दलदल में गिरता ही चला जायेगा। किसी भी लोकतंत्रात्मक सरकार को समाज में मूर्खता और अज्ञानता फ़ैलाने वाले काल्पनिक ग्रंथो को प्रचार प्रसार करने के बजाये स्वास्थ्य, शिक्षा, भाईचारे और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने वाली योजनाओं एवं कार्यक्रमों को प्राथमिकता देनी चाहिए। लोक कला के नाम पर रामायण मंडली करना लोक कला एवं लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करना नहीं बल्कि उनकी असल संस्कृति और परंपरा को नष्ट करना है।" ▪

लोहिया और रामायण

'समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़े पावें सौ में साठ' का नारा देने वाले राम मनोहर लोहिया रामायण के बारे में क्या सोचते हैं। पिछड़ों के घरों में रामायण को पहुंचने के लिए कैसे कांग्रेस से हाथ मिलाया।

रामायण मेला के आयोजन की परिकल्पना डॉ. राममनोहर लोहिया ने सन् 1961 में की थी। उसी के तहत 1973 में पहली बार उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी ने चित्रकूट में रामायण मेला आयोजित किया था, जबकि अयोध्या में इसकी शुरूआत 1982 में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीपति मिश्र ने की थी जिसका उद्देश्य रामायण मेले को केन्द्र में रखकर अयोध्या का विकास करना था।

आनन्द, प्रेम और शान्ति के आह्वान के मुख्य प्रयोजन के साथ राममनोहर लोहिया ने रामायण मेला आयोजित करने की संकल्पना की थी। उन्हें लगता था कि आयोजन से भारत की एकता जैसे लक्ष्य भी प्राप्त किए जाएँगे। लोहिया मानते थे कि कम्बन की तमिल रामायण, एकनाथ की मराठी रामायण, कृत्तिबास की बंगला रामायण और ऐसी ही दूसरी रामायणों ने अपनी-अपनी भाषा को जन्म और संस्कार दिया। उनका विचार था कि रामायण मेला में तुलसी की रामायण को केन्द्रित करके इन सभी रामायणों पर विचार किया जाएगा और बानगी के तौर पर उसका पाठ भी होगा। लोहिया का निजी मत था कि तुलसी एक रक्षक कवि थे। ▪

गीता प्रेस का गोरखधंधा

कालूपुर अहमदाबाद का रेलवे स्टेशन

धीरेन्द्र यादव
वरिष्ठ अधिवक्ता, इलाहाबाद हाईकोर्ट

"गीता प्रेस के 200 का वेतन, कागज की छपाई, छपाई मशीनों को चलाने के लिए बिजली का खर्च, पुस्तकों पर भारी भरकम सब्सिडी और सरकार या किसी भी अन्य व्यक्ति या संस्था से किसी तरह का कोई अनुदान नहीं लेने के बावजूद भी गीता प्रेस इतने वर्षों से सुचारुपूर्ण तरीके से संचालित कैसे हो रहा है? गीता प्रेस तो नहीं लेकिन गीता प्रेस की संचालक संस्था के पीछे कौन हैं जो इसे फंडिंग कर रहा है, रेलवे स्टेशनों पर बने गीता प्रेस के बुक स्टॉलों से रेलवे को प्रतिवर्ष कितनी आय हो रही है? किस आधार पर एक सार्वजानिक संस्था रेलवे द्वारा गीता प्रेस को बुक स्टॉल उपलब्ध करवाए गए हैं?"

हाल ही में रामचरित मानस को लेकर उपजे विवाद में गीता प्रेस भी शामिल हो गया है, जिसका कारण गीता प्रेस द्वारा 1953 में अवधी भाषा प्रकाशित रामचरितमान के हिंदी अनुवाद और उसकी व्याख्या है। रामचरितमानस की चौपाई 'ढोल गावर शूद्र पशु नारी सकल ताड़ना के अधिकारी' के हिंदी अनुवाद में ताड़ना शब्द 'दंड' के अर्थों में इस्तेमाल किया गया है, चौपाई का हिंदी अनुवाद इस प्रकार से है। "ढोल. गंवार, शूद्र, पशु और स्त्री- ये सब दंड के अधिकारी हैं।" लेकिन गीता प्रेस द्वारा के रामचरितमानस के वर्त्तमान में बाजार में उपलब्ध संस्करण में ताड़ना शब्द का अर्थ बदल चुका है। इसमें लिखा गया है किः "ढोल. गंवार, शूद्र, पशु और स्त्री- ये सब शिक्षा के अधिकारी हैं।" वर्तमान संस्करण में ताड़ना शब्द को जिस प्रकार से व्याख्यायित किया है उसको लेकर उसकी मंशा पर सवाल उठाने लगे हैं।

आखिर गीता प्रेस ने इस प्रकार का बदलाव किया क्यों? गीता प्रेस के इस बदलाव के पीछे महत्वपूर्ण कारण दिखाई दे रहा है कि रामचरित मानस की स्वीकार्यता बनी रहे। जाने माने चिंतक दिलीप मंडल लिखते हैं कि" तुलसीदास ने जब लिखा होगा तब उन्होंने नहीं सोचा होगा कि कलयुग आएगा, संविधान लागू होगा, सब लोग पढ़ने लिखने लगे होंगे और रामचरित मानस सब लोग पढ़ पाएंगे, इस लिए बहुत खुलकर लिखा है तुलसीदास ने। संविधान के निर्माण और उसके लागू होने से पूर्व ही से पूर्व गीता प्रेस ने रामचरितमानस का पहला अनुदित संस्करण 1948 में छापा था। हनुमान प्रसाद पोद्दार ने जब रामचरितमानस का हिंदी अनुवाद किया तो वे संविधान की ताकत को भाप नहीं पाए। नहीं तो पहले ही वर्तमान स्वरुप में अनुदित करते। हनुमान प्रसाद पोद्दार 1971 में मर गए दिलीप मंडल आगे लिखते हैं कि उनकी मृत्यु के इतने साल बाद उनके अनुवाद में अर्थ बदल दिया गया। लोकतंत्र और बदलते समाज में बहुत शक्ति होती है। लोकतंत्र की चक्की धीरे पीसती है, पर बारीक पीसती है, वही तुलसीदास वही रामचरितमानस, वही गीता प्रेस। सिर्फ़ 75 साल में इतना बदलाव हो गया कि कोई खुलकर छुआ-छूत नहीं कर रहा है। बदलाव की गति भी कोई कम नहीं है। देश-काल-परिस्थितियों के मुताबिक़ धर्म ग्रंथों में अर्थ बदलते रहते हैं। 21वीं सदी में आप शूद्रों और नारी की पिटाई की बात कैसे कर सकते हैं। इसलिए मैंने रामचरितमानस में बदलाव का स्वागत किया है।"

गीता प्रेस विशेष एजेंडे के तहत काम कर रहा है। गोरखपुर का गीता प्रेस और गोरखपुर के ही योगी। हाल ही में योगी जी सनातन धर्म को राष्ट्रीय धर्म बनाये जाने के लिए जिस प्रकार का बयान दिया है भारतीय संविधान का खुला उलंघन है। संविधान के लिए देश को तीन हज़ार साल इंतजार करना पड़ा, वर्षो की कड़ी मेहनत के बाद भारत का संविधान बन सका। संविधान में दो लाईन का बदलाव करने में

कालूपुर अहमदाबाद का रेलवे स्टेशन

वर्षों लग जाते हैं गीता प्रेस ने एक ही झटके में बदलाव कर दिया। खैर बदलाव का स्वागत किया जाना चाहिए।

गीता प्रेस का इतिहास-भूगोल

गीता प्रेस सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 (वर्तमान में पश्चिम बंगाल सोसायटी अधिनियम, 1960 द्वारा शासित) के तहत पंजीकृत गोबिंद भवन कार्यालय की एक इकाई है। विश्व की सर्वाधिक हिंदू धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्था है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन और मुद्रण का काम कर रही है। संस्था का मुख्य उद्देश्य सनातन धर्म, हिंदू धर्म के सिद्धांतों को गीता, रामायण, उपनिषद, पुराण, प्रख्यात संतों के प्रवचन और अन्य चरित्र-निर्माण पुस्तकों और पत्रिकाओं को प्रकाशित करके और उन्हें अत्यधिक सब्सिडी पर विपणन करके आम जनता के बीच प्रचार और प्रसार करना है। इसमें लगभग 200 कर्मचारी काम करते हैं। गीता प्रेस में प्रतिदिन 50 हजार से अधिक पुस्तकें छपती हैं। गीता प्रेस की पुस्तकों में हनुमान चालीसा, दुर्गा चालीसा और शिव चालीसा की कीमत एक रुपये से शुरू होती है। पुस्तकें लागत से 40 से 90 प्रतिशत कम दाम पर बेची जाती हैं। गीता प्रेस सरकार या किसी भी अन्य व्यक्ति या संस्था से किसी तरह का कोई अनुदान नहीं लेता है। गीता प्रेस की पुस्तको की आपूर्ति देश के 42 प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर बने बने गीता प्रेस के बुक स्टालों पर की जाती है। (स्रोत - विकीपीडिया)। बसावन इंडिया आगामी अंकों में इन तथ्यों पर विस्तृत रिपोर्ट का प्रकाशन करेगी। ▪

धर्म क्या कहता है भारतीय संविधान

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में ही भारत को धर्मनिरपेक्ष घोषित किया गया है। जिसमे सर्व धर्म संभव का सूत्र लागू है, राज्य में सभी धर्म लागू हैं। राज्य का संबंध धर्म में विश्वास पैदा करने के लिए नहीं है धर्म में विश्वास व्यक्ति का निजी मामला हो सकता है भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 से 28 सभी भारतीयों को धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार देता है

अनुच्छेद (25) - अंतःकरण, धर्म के आचरण की स्वतंत्रता और धर्म का प्रचार - प्रसार करने की स्वतंत्रता, इसके अंतर्गत अंतःकरण की स्वतंत्रता निहित है। जिसके तहत व्यक्ति ईश्वर के किसी भी रूप को मान सकता है, इसका प्रचार व प्रसार कर सकता है और यह भी स्वतंत्रता की यदि व्यक्ति चाहें तो नैतिक धर्म (अंतःकरण) को भी मान सकता है, परंतु धर्म के आधार पर ऐसे कार्य नहीं किया जा सकता जिससे समाज प्रभावित हो।

अनुच्छेद (26) - धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता - किसी भी संप्रदाय को धार्मिक संसस्थाओं की स्थापना एवं उनके पोषण का एवं अपने धर्म विषय कार्यों के प्रबंध करने का अधिकार है।

अनुच्छेद (27) - किसी धर्म विशेष या सम्प्रदाय की उन्नति के लिए कर न देने की स्वतंत्रता, यह धर्मनिरपेक्ष राज्य के आदर्श को बल प्रदान करता है, इसके द्वारा यह व्यवस्था की गई है कि राज्य द्वारा किसी भी व्यक्ति को ऐसे करो को देने हेतु बाध्य नहीं किया जाएगा, जिससे किसी भी विशेष धर्म का पोषण होता हो।

अनुच्छेद (28) - धार्मिक शिक्षा में अनुपस्थित होने से स्वतंत्रता - राज्य निधि से पूर्णतः पोषित किसी शिक्षा संस्था में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी।राज्य द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाओं में लोगो की सहमती से धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है।राज्य निधि से सहायता प्राप्त संस्थाओं में लोगो की सहमती से धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है। जैसे - धार्मिक शिक्षण संस्थाओं में (मदरसों, संस्कृत विद्यालयों) आदि। लेकिन सरकारी निर्देशानुसार उन्हें सरकार द्वारा निर्देशित पाठयक्रम पढ़ना भी अनिवार्य होगा। न्यास (Trust) द्वारा स्थापित संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा दी जा सकती है। ▪

योगी जी भाषण देते हुए

योगी का 'सनातन धर्म'

देश के हिंदी भाषी पट्टी में आज जब रामचरित मानस को लेकर बहस छिड़ी है उसी दौरान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सनातन धर्म को लेकर एक अन्य बहस छेड़ दिया है। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म भारत का राष्ट्रीय धर्म है। व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर हम राष्ट्रीय धर्म से जुड़ते हैं। हमारा देश सुरक्षित हो। गौ और ब्राम्हण की रक्षा हो। हम यदि राष्ट्रीय धर्म से जुड़ते हैं तो देश सुरक्षित होता है। हमारे धर्म स्थलों को तोड़ा जाता है तो उनका फिर से पुनर्निर्माण भी होता है। अयोध्या में 500 साल बाद राम मंदिर बन रहा है। दिव्य और भव्य मंदिर बन रहा है। इतना ही नहीं सीएम योगी ने यह भी कहा कि किसी काल खंड में अगर हमारे धर्म स्थलों को अपवित्र किया गया है तो उनकी पुनर्स्थापना का एक अभियान चले।

Dr. Udit Raj @Dr_Uditraj · 27 Jan
हमारा सनातन धर्म भारत का राष्ट्रीय धर्म: बोले CM योगी।मतलब सिख , जैन, बौद्ध, निरंकार, ईसाई और इस्लाम धर्म खत्म।

Dr. Udit Raj @Dr_Uditraj · 27 Jan
पहले बता दो सनातन धर्म में महिलाओं, दलितों व पिछड़ों का स्थान कहाँ है फिर आगे की बात करते हैं।

सीएम योगी के बयान पर कांग्रेस नेता उदित राज ने ट्वीट कर कहा कि सीएम योगी बोले कि हमारा सनातन धर्म भारत का राष्ट्रीय धर्म है। मतलब सिख, जैन, बौद्ध, निरंकार, ईसाई और इस्लाम धर्म खत्म। इतना ही नहीं उदित राज ने कहा कि पहले बता दो सनातन धर्म में महिलाओं, दलितों व पिछड़ों का स्थान कहाँ है फिर आगे की बात करते हैं।

कँवल भारती

लेखक एवं समाजिक चिंतक

यह सबसे बड़ा झूठ है कि हिंदू धर्म सनातन धर्म है। जबकि सच यह है कि सनातन जैसी कोई चीज नहीं है। क्या वेदों से पहले भारत में कोई धर्म नहीं था? फिर कैसे हिंदू धर्म सनातन हो गया?

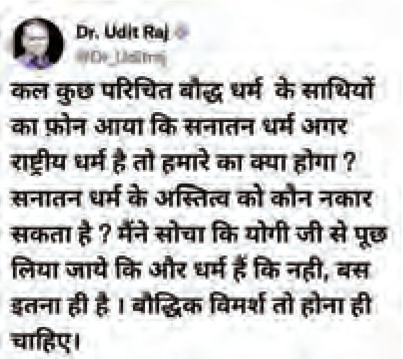
Dr. Udit Raj
@Dr_Uditraj
कल कुछ परिचित बौद्ध धर्म के साथियों का फ़ोन आया कि सनातन धर्म अगर राष्ट्रीय धर्म है तो हमारे का क्या होगा ? सनातन धर्म के अस्तित्व को कौन नकार सकता है ? मैंने सोचा कि योगी जी से पूछ लिया जाये कि और धर्म हैं कि नही, बस इतना ही है । बौद्धिक विमर्श तो होना ही चाहिए।

उदित राज ने कहा कि कल कुछ परिचित बौद्ध धर्म के साथियों का फोन आया कि सनातन धर्म अगर राष्ट्रीय धर्म है तो हमारे का क्या होगा? सनातन धर्म के अस्तित्व को कौन नकार सकता है? मैंने सोचा कि योगी जी से पूछ लिया जाये कि और धर्म हैं कि नही, बस इतना ही है। बौद्धिक विमर्श तो होना ही चाहिए।

मनोज यादव

समाजवादी नेता

"पहली बात सनातन धर्म का इनसाइक्लोपीडिया क्या है? नंबर दो सनातन धर्म में राष्ट्रीय धर्म होने के बाद छुआछूत का क्या होगा? क्या फिर से छुआछूत आएगा? इसके अलावा इस बात पर जोर देना होगा की भारत जैसे देश में जहां जातियां ही धर्म है किस जाति का प्रभुत्व होगा? हमारे देश में पहले ही बटवारा हो चुका है। क्या सनातन धर्म को राष्ट्रीय धर्म बता कर संविधान पर सीधा हमला किया गया है। सनातन धर्म के पुस्तक कौन सी है कानून किसका माना जाएगा यह सब बातें गंभीर विमर्श पैदा कर रही हैं। यादवों का धर्म क्या होगा उनकी पुस्तक कौन सी होगी जिस पर वह आगे बढ़ेंगे गतिविधियां कौन-कौन से होंगे सनातन धर्म को मानने वाले क्या-क्या करेंगे उनकी नियमावली क्या होगी यह सब विमर्श का विषय है।"

नरेन्द्र प्रताप
मो.न.- 9453171770

अमरदेशवा, बेगमपुरा बनाम रामराज्य

▪ मिथलेश सिंह यादव

तुलसीदास, कबीर और रैदास समकालीन कवि है। रैदास और तुलसी तो एक ही गुरु, रामदास के शिष्य थे। तीनों की कर्मभूमि भी एक ही थी, काशी। फिर तुलसीदास को मनु का और रामचरित मानस को मनुस्मृति का सॉफ्ट वर्जन क्यों कहा जाता है जबकि कबीर और रैदास को जनसरोकारी कवि। द्विज हिन्दुवों में तुलसी की प्रतिष्ठा मनु के बराबर क्यो है। ..?

इसे समझने के लिए उनके समकालीन कवियों कबीर और रैदास को पढ़ना चाहिए।

पहले कबीर की बात करते है। तुलसी ने " *रामराज्य* " की परिकल्पना की थी, कबीर ने ''*अमरदेसवा*'' की और रैदास ने "*बेगमपुर*" की।

तुलसी के " रामराज्य '' में वर्ण व्यवस्था होगी, धर्म का पालन होगा और वेद की ऋचाएं कानून होंगी।

तुलसी के शब्दों में -

वरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग।

इसके उलट कबीर के "अमरदेसवा" में जाति - व्यवस्था नहीं होगी, धर्म का कोई मायने नहीं होगा, वहां न कोई हिंदू होगा और न कोई मुसलमान तथा देवी - देवता राज्य की सीमा से बाहर होंगे।

कबीर के शब्दों में :-

ब्राम्हन छत्री न सूद्र बैसवा, मुगल पठान नहीं सैयद सेखवा।
आदि जोति नहिं गौर गनेसवा, ब्रह्मा बिस्नु महेस न सेसवा ।।

अब बात रैदास की

रैदास और तुलसी एक ही गुरु के दो शिष्य और दोनों अपने समय के प्रकांड विद्वान लेकिन दोनों वैचारिक रूप से विपरीत ध्रुवों पर खड़े थे। रैदास के बारे ज्यादातर लोग "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" जैसी सॉफ्ट भजनों से जानते है लेकिन रैदास अपने गुरुभाई तुलसी की स्थापना के विरुद्ध बहुत कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुवे बहुत कुछ लिख गए है।

पुराने अनुभव के आधार पर ये कहा जा सकता है कि बहुत से मित्र इनसे असहज हो सकते है फिर भी किसी को "मानव - मानव एक समान" की संल्पना देने वाले कवि को उधृत करने मे कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।

'जीवन चारि दिवस का मेला रे।
बांभन झूठा, वेद भी झूठा, झूठा ब्रह्म अकेला रे।।'
'मंदिर भीतर मूरति बैठी, पूजति बाहर चेला रे।
लड्डू भोग चढावति जनता, मूरति के ढिंग केला रे।।'
'पत्थर मूरति कछु न खाती, खाते बांभन चेला रे।
जनता लूटति बांभन सारे, प्रभु जी देति न अधेला रे।।'
'पुन्य -पाप या पुनर्जन्म का, बांभन दीन्हा खेला रे।
स्वर्ग -नरक, बैकुंठ पधारो, गुरु शिष्य या चेला रे।।'
'जितना दान देवे गे जैसा, वैसा निकरै तेला रे।
बांभन जाति सभी बहकावे, जन्ह तंह मचै बबेला रे।।
छोड़ि के बांभन आ संग मेरे, कह विद्रोहि अकेला रे।।'

अंत मे रैदास तुलसी के पूजिये विप्र ग्यान गुन हिना, न पूजिये शूद्र गुन ग्यान प्रवीना के विरुध्द कहते है-

'रैदास बाभन न पूजिये जो हो ज्ञानगुन हीन।
पूजिये चरन चंडाल के जो होवे गुन ज्ञान प्रवीना।।'

ये उनके कुछ ऐसे पद है जो बहुत ज्यादा पब्लिक नहीं है। ये अपनी जाति की वजह से ही उनका भोगा हुवा यथार्थ है।

इसलिए इस मुद्दे पर वो अपने गुरु भाई तुलसी का विरोध करते भी दिखते है। मार्क्स से बहुत पहले ही उन्होंने श्रम की महत्ता को जान लिया था।

'श्रम को ईश्वर जानि कै जो पूजे दिन रैंन
रैदास तीनि संसार मा सदा मिले सुख चैंन।'

हिंदू मुस्लिम एकता हो या ब्राह्मण शुद्र का भेद, रैदास दोनों पर जबरजस्त तरीके से चोट करते है,

'जब सब कर दोउ हाथ, दोउ पग नैंन दोउ कान,
रैदास पृथक कइसे भये हिंदू औ मुसलमान।'
'एके चाम एक मल मुतर एक खून एक गुदा
एक खून से सब उत्पन्ने को बाभन को सूदा।'

इतना पढ़ने लिखने के बाद भी यदि सबाल्टर्न समाज का कोई व्यक्ति तुलसीदास के लिखे की आलोचना न कर सके तो समझिए कि रैदास और कबीर का सारा जीवन व्यर्थ ही रहा। ▪

नहीं रहा मंडल का लड़ाका माटी के लाल की अंतिम विदाई

▪ डॉ. लाल रत्नाकर

केवल इस बात का उल्लेख करना कि माननीय शरद यादव जी राजनीतिक रूप से जितने सजग रहे हैं वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना है लेकिन एक मनुष्य के रूप में उनका जो स्वभाव और व्यवहार रहा है वह बिल्कुल जन सामान्य और धरती से जुड़े हुए तरीके का रहा है।

मैं यह बात बहुत जिम्मेदारी से कह सकता हूं कि उन्होंने कभी भी किसी तरह का दिखावा नहीं किया और ना ही कभी उन्होंने किसी की उपेक्षा की यह उनके स्वभाव का सबसे बड़ा गुण रहा है और यहां तक कि वह अपनी माटी से जुड़े हुए व्यक्ति थे जो हमेशा सामाजिक आंदोलनों के महापुरुषों का जिक्र करते रहे और अपने जीवन में किसी भी तरह के पाखंड और अवैज्ञानिक परंपराओं और सरोकारों को आने नहीं दिया उन्होंने अनेको विपरीत परिस्थितियों में राजनीति की राजनेताओं का विश्वास किया और ऐसा लगता है कि बहुत सारे राजनेताओं ने उन्हें अनेकों समय पर धोखा दिया है। लेकिन इन धोखों से भी वह विचलित नहीं होते थे बल्कि उनका मानना था कि यह उनकी राजनीतिक मजबूरी रही होगी जो ऐसा किया है।

ऐसी गंभीरता वाला व्यक्ति जिसने अपने जीवन में कभी भी किसी तरह के दुर्गुण नहीं आने दिया जिसकी आज के राजनेताओं में बहुतायत में उसका प्रभाव देखा जा सकता है। उनके जीवन में एक बात और महत्वपूर्ण है कि उन्होंने बहुत बड़े-बड़े लोगों के संपर्क में

होने के बावजूद अपने कार्यकर्ताओं और अपने साथियों का बहुत ध्यान रखते थे यथा योग्य सभी के आचरण की जानकारी उनको बखूबी हुआ करती थी मुस्कुरा कर के जिस तरह से लोगों का वह जिक्र करते थे वह विस्तारित करने की जरूरत नहीं है एक शब्द में पूरे व्यक्तित्व और स्वभाव को चिन्हित कर दिया करते थे कितना गहरा था उनका अनुभव और उनका संग्रह जिसमें इतनी घटनाएं भरी हुई थी जिसका जब एकांत में उनसे बात होती थी एक एक बात को कहा करते थे कितने लोगों ने उनके साथ कितने तरह के विश्वासघात किए हैं उन सारे घटनाक्रमों को उन्होंने कैसे जिया है वह वही जानते हैं।

मुझे इतना प्यार करते थे जिसका मैं उल्लेख शब्दों में नहीं कर सकता मेरे बारे में बहुत मेरे साथियों से बातें किया करते थे जिसमें मेरी बुराइयां और अच्छाइयां दोनों होती थी कई एक बार मैंने यह देखा कि वह यह चाहते थे कि मैं अपने अनुभव और ज्ञान को और समृद्ध करूं जिसकी वह निरंतर चिंता भी करते थे और चर्चा भी करते थे।

ऐसे व्यक्ति के विषय में मैं कुछ भावनात्मक बातें लिख रहा हूं और कुछ लोगों के उल्लेख कर रहा हूं जो हमारे बहुजन समाज के लोग अनुभव करने की कोशिश करें और सामने के राजनेताओं के समक्ष किस तरह से अपनी तैयारी करें जिससे सदियों के संकट से निकल सकें। उसके प्रभाव को देखा जा सकता है।

प्रातःकाल भोपाल आकर, मा.शरद यादव जी के गांव आखरमऊं में अन्त्येष्टी के कार्यक्रम जाने हेतु सुनील सरदार जी के साथ जब हम

मंडल रथ यात्रा के दौरान

दिग्विजय सिंह
पूर्व मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश

> "शरद यादव जी मध्यप्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के प्रखर समाजवादी नेता रहे हैं और बिना पद की लालसा के उन्होंने किसानों और मजदूरों की लड़ाई लड़ी। हमारे उनके अच्छे पारिवारिक संबंध रहे। मैं आज इस अवसर पर उनके परिवार को संवेदनाएं व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।"

जीवन सफर

जन्म स्थान : 1 जुलाई, 1947, गांव- आंखमउ, तहसील- बाबई, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)।
माता पिता : श्रीमती सुमित्रा देवी श्री नंद किशोर यादव।
पत्नी संतान : डॉ. रेखा यादव, शांतनु बुंदेला (बेटा) और सुभाषिनी यादव (बेटी)।
शिक्षा : बी.एससी. (रॉबर्टसन मॉडल साइंस कॉलेज, जबलपुर) एवं बी. टेक. (जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज, मध्य प्रदेश)।
छात्र जीवन में विभिन्न आंदोलनों एवं मीसा एक्ट के तहत जबलपुर, रीवा, बिलासपुर, नरसिंहगढ़, बालाघाट, सोनीपत और एटा की जेलों में 1969 से 1975 तक कई बार बंद रहे। पहली बार पांचवी लोकसभा उप चुनाव के लिए 1974 में एवं दूसरी बार छठी लोकसभा के लिए 1977 में
लोकसभा- जबलपुर (मध्यप्रदेश) से निर्वाचित तीसरी बार 1989 में बदायूं (उत्तर प्रदेश) से तथा चौथी बार उप चुनाव में (1991 ई.), पांचवीं बार (1996 ई.), छठी बार (1999 ई.) एवं सातवीं बार (2009 ई.) मधेपुरा (बिहार) से निर्वाचित (जुलाई 1986 जुलाई 2004 जून 2014 एवं जुलाई 20161
राज्यसभा मंत्री- केन्द्र सरकार के विभागों में कैबिनेट मंत्री, कपड़ा और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (दिसम्बर 1989 नवंबर 1990), नागरिक उड्डयन मंत्रालय (अक्टूबर 1999 अगस्त 2001) श्रम मंत्रालय (सितंबर 2001 जून 2002), उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय (जुलाई 2002 मई 2004)।
संगठन- राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवा जनता पार्टी 1978 राष्ट्रीय महासचिव लोकदल राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवा लोकदल राष्ट्रीय महासचिव, जनता दल (1989-97) नेता, जनता दल संसदीय पार्टी (1993) कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष, जनता दल (1995)। जनता दल(1997) राष्ट्रीय अध्यक्ष, जदयू (2003-2016)
राष्ट्रीय अध्यक्ष- मई 2018 में लोकतांत्रिक जनता दल की स्थापना एवं 20 मार्च 2022 को दल का राजद में विलय
सम्मान- उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार, 2012 से सम्मानित हॉकी, कबड्डी, कुश्ती, बैडमिंटन एवं संगीत में रुचि तथा सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर लिखना पढ़ना
रुचि उल्लेखनीय मंडल कमीशन को लागू करने में अहम भूमिका, तीन राज्यों (मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार) से लोकसभा सदस्य चुने गए।
निधन- 12 जनवरी, 2023 को गुड़गांव के फोर्टिस अस्पताल में ।

दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुंचे थे तब उनके कुछ संबंधी भी उसी जहाज से भोपाल जा रहे थे, स्वाभाविक था उन लोगों से यह समझना कि किस तरह का कार्यक्रम है। राजकमल राव जो उनके सन इन लॉ है से यह तय हो गया था कि बाहर मिलते हैं, इसी समय बातचीत में पता चला प्रोफ़ेसर सुशीला मोराले भी दूसरी फ्लाइट से भोपाल आ रही है हमारे उनके पहुंचने का अंतर बहुत कम था।

सुनील सरदार जी के और हमारे कई मित्र राष्ट्रीय पिछड़ा संगठन चलाते हैं जो कुशवाहा समाज से आते हैं जिनमें एडवोकेट धर्मेंद्र कुशवाहा, यशवीर कुशवाहा अपने अनेक साथियो के साथ भी एयरपोर्ट पर उपस्थित हो गए थे। राजकमल राव से मुलाकात हुई और उन्होंने जो कार्यक्रम बताया उसके अनुसार लगभग 12:00 बजे माननीय का पार्थिव शरीर बाई एयर भोपाल आना था स्वाभाविक है कि अब उसी कार्यक्रम से जुड़े स्टेट लॉउन्ज की तरफ हमे ले जाया गया।

मेरी फ्लाइट लगभग 7:30 बजे प्रातः काल भोपाल पहुंच गई थी और हम सब लोग 8:00 बजे तक इकट्ठे हो गए थे अब थोड़े बहुत विलंब से हम लोग उससे कह पहुंचे थे जहां पर प्रशासन तैयारी किए हुए थे माननीय के पार्थिव शरीर को ले आने के लिए अब धीरे-धीरे बात लोगों तक पहुंच गई थी और भोपाल की जो भी उनके जमाने के नेता थे या उनके चाहने वाले थे इकट्ठे होने शुरू हो गए थे।

11:00 बजे के आसपास कांग्रेस के बड़े नेता और मध्य प्रदेश के अनेक बार मुख्यमंत्री रहे दिग्विजय सिंह जी भी आ गए और जैसे

मंडल रथ यात्रा के दौरान

ही 12:00 बजने को हुआ उससे पहले मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी वहां उपस्थित हो गए।

सभी के चेहरे नम थे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे इतनी शांति पसरी हुई है और मीडिया के लोग उसी में अपने-अपने चैनल के लिए पल-पल की खबर दे रहे थे। कि फला फला आ गए हैं और पता चला है कि पार्थिव शरीर लगभग 12:00 बजे आने वाला है, यही हुआ उस स्टेट लाउंज में दरवाजे खुले और कंधे पर उनके पार्थिव शरीर को उठाए हुए शांतनु एवं परिवार के अन्य सदस्य दिखाई दिए साथ में सुभाषिनी उनकी मां के साथ जो महिलाएं इस अवसर पर रिसीव करने गई थी सब लोग आती हुई नजर आई।

मा. शरद जी के जिस पार्थिव शरीर को छतरपुर स्थित उनके आवास पर देखा था, जहां देश के राजनीतिक बहुत ही विनम्रता से उन्हें विदाई दे रहे थे ऐसा लग रहा था जैसे वह विश्राम कर रहे हैं और अभी थोड़ी देर में उठ खड़े होंगे, यह उनके साहस के प्रति कम से कम मेरे मन में हमेशा विश्वास था, जितनी शालीनता से देश के बहुजन मानस की सेवा के लिए उन्होंने पूरी जिंदगी लगा दी। आज सुबह कल की सुबह से अलग थी क्योंकि जैसे ही उनके ना रहने की खबर मुझे फोन द्वारा संजय भाई ने दी थी उसी समय प्रातः काल दिल्ली के लिए निकलने की फ्लाइट मुंबई से तय हो गई थी अजय भाई और उनके परिवार को जब हमने यह खबर बताएं तो सभी लोग आहत थे और मेरा तत्काल दिल्ली पहुंचना मेरे कर्तव्य साथ जुड़ा हुआ था।

लेकिन आज भोपाल के हवाई अड्डे पर लगने लगा था कि अब वह हमारे बीच से चले गए हैं।उन्हें एक सफेद बक्शे में पार्थिव शरीर के रूप में चार्टर्ड के द्वारा भोपाल लाया गया था और पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनकी यह यात्रा मुझे पैतृक गांव के लिए एक काफिले की निकल ली थी प्रदेश के मुख्यमंत्री इस यात्रा की अगवानी किए थे और निवर्तमान मुख्यमंत्री इस यात्रा में उनके पैतृक गांव तक बिल्कुल सामान्य व्यक्ति की तरह मौजूद रहे।

जगह-जगह लोगों ने उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए इस पार्थिव शरीर के वाहन में चालक के बगल में बैठे उनके पुत्र शांतनु सबके अभिवादन स्वीकार करते हुए बढ़ रहे थे, सामाजिक न्याय के अग्रदूत मंडल मसीहा आज अपनी उसी मातृभूमि को लौट रहे थे जहां से वह निकल कर जबलपुर के इंजीनियरिंग कॉलेज से शिक्षा लेने के लिए एक युवा के रूप में आए थे। तब से लेकर अब तक उस गांव जाने के रास्ते हाईवे से जुड़े हैं के आसपास उद्योग धंधे बड़े हैं बड़े हिस्से में पर्वतीय श्रृंखलाएं दिखाई देती है लेकिन उनके घर पहुंचने से पहले जो हरे भरे खेतों का बहुत बड़ा विस्तार दिखाई दिया वह बता रहा था कि यह कृषि योग्य उपजाऊ भूमि है।

गांव के रास्ते पर मुड़ने से पहले के एक पेट्रोल पंप पर स्थानीय प्रशासन के लोग पुलिस की खुली गाड़ी को बहुत सादगी से तैयार करके रखे थे और अब भोपाल से लाए वाहन से पार्थिव शरीर को निकालकर उस पुलिस की गाड़ी पर रखा गया जिस पर चढ़ने की मेरी हिम्मत नहीं हुई हालांकि इस गाड़ी में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी के साथ परिवार के लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे, मैं चाह कर भी नहीं जा सकता था, मैं अक्सर उनके पास रहकर खड़ा ही रहता था, और जब से मै उनके साथ राजनीति में आया था मर्यादाओं का बहुत ध्यान रखता था।

मुझे लग रहा था जैसे वह कह रहे हैं तुम करीब क्यों नहीं आ रहे हो। मैं दूसरी तरफ चला जाता था की जिससे उन्हें यह ना दिखाई दे। लेकिन हमेशा उनके विचारों के साथ होता था, जब लोग के साथ अकेले होता था क्या क्या सिखाते थे। कितनी पुरानी पुरानी बातें बताते थे मैंने देखा था कि राजनीति में जो इतने करीब दिखाने की कोशिश करता है उसका भाव क्या है वह बहुत अच्छी तरह समझते थे।

आज यह अवसर ऊन बातों को कहने का नहीं है आंख बार-बार भर आ रही थी, क्योंकि पिछले दिनों से सरकार की निरंकुशता जब उसने सात तुगलक रोड के आवास को एक ऐसे व्यक्ति से खाली करा लिया था जिस व्यक्ति का योगदान देश के संविधान को गौरवान्वित करने का रहा हो, उनका अपना कोई निजी आवास ना होने की वजह से उन्हें सुदूर छतरपुर के फार्म हाउस में किराए के घर में रहना पड़ा था।

यह बात अब समझ में आई कि अपने परिजनों से उन्होंने अपने अंतिम संस्कार के लिए अपने गांव को क्यों चुनने को कहा था।......?

अब जैसे ही सड़क से पार्थिव शरीर का वाहन गांव में मुड़ा था अगल बगल मेला लगा था, बड़े बुजुर्ग सभी दुखी थे, हालांकि रास्ते में जितनी बाजारें पड़ी थी उनमें ऐसा लग रहा था जैसे सब लोग सड़क पर आ गए हैं, जो सड़क पर नहीं आए हैं वह अपने छतों की मुरेडों से ऐसे नायक को देख रहे हो जो सत्य के मार्ग पर चलते हुए वहां वापस आ रहा हो जहां से वह देश की सेवा के लिए निकला था, अपने उसी भारत के गांव में जो आज के गांव जैसा और आज के नेताओं जैसा नहीं है जहां पर केवल अपनी सुविधाओं का अंबार लगा दिया जाता है।

एक और बात बताता चलूं कि उनके इंजीनियरिंग के साथी जैन साहब उनके गांव में पैदल चल रहे थे जो पूरे जैसे शहर में अपना उद्योग चलाते हैं एयरपोर्ट से ही मैं उनको देख रहा था उनकी सादगी उनका समर्पण और एक मित्र के प्रति समर्पित सम्मान। और वहां के लोगों की छवि।

मुख्यमंत्री से लेकर जिलाधिकारी तक अपनी उपस्थिति से कितने शांतप्रिय तरीके से माननीय शरद यादव जी के प्रति आदर और सम्मान दिया है, यह उनके महान व्यक्तित्व कसौटी रही है क्योंकि वह हमेशा बाबा साहब अंबेडकर, पेरियार, राम मनोहर लोहिया, जगदेव प्रसाद कुशवाहा, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, बिरसा मुंडा और न जाने कितने ऐसे नायक जिन पर हमेशा पर

चर्चा करनी थी उन्होंने अपने कर्तव्य के साथ उन्हीं लोगों के त्याग और जनकल्याण की विचारधारा को जीवन भर धारण करके रखा आज वही जनता विस्मयकारी दृष्टि से उस पूरे सफर को देख रही थी।

मैंने देखा कि वहां के जिलाधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी बैठ कर के सारी व्यवस्था पर नजर रखे हुए थे और जो भी पुलिस व्यवस्था के लिए लगाई गई थी जैसे उसको पता हो कि वह क्या चाहते थे।

मैं जब गांव में पारंपरिक क्रियाकलाप चल रहे थे तो अड़ोस पड़ोस की उन घरों पर गया जो महिलाएं लगभग बुजुर्ग हो गई थी। उनसे पूछा कि आप कुछ कहेंगी उनके बारे में। सुदूर जमीन पर बैठा एक व्यक्ति कह रहा था जब वह आते थे तो सबको पैसा मांगे थे किसी को नहीं छोड़ देते जो भी उनसे मिलता था।

अपने वैभवशाली केंद्र और प्रदेशों की सत्ता जिसका उद्देश्य सामाजिक न्याय था सूचिता थी, जिसकी आवाज से भारत की संसद और संसदीय गरिमा में उनकी संवैधानिक ढांचे को ठीक करने के लिए दहाड़ को पूरा देश देखता और सुनता था।

मंडल कमीशन का मामला हो, सामाजिक न्याय का मामला, इसके अलावा उनके अनेक क्षेत्रों में किए गए सुधारवादी कार्यक्रमों का सवाल हो। श्रोता यह महसूस करता था कि जैसे उसका अपना कोई प्रतिनिधि भारत के इस बड़े पंचायत घर में बहुत जोरदार तरीके से उसकी आवाज को बुलंद कर रहा है।

आज गांव पहुंचकर यह लगा कि वह किसके लिए बोलते थे उन बेईमानों के लिए जो उनके साथ लगे रहे और उनके विचारों से बहुत दूर रहें, कितने लोगों को जानता हूं मैं लेकिन वह गांव उनकी सच्चाई कर रहा था नॉर्मल है नमन कर रहा था वहां के पेड़ पौधे पशु पक्षी उस मिट्टी से निकले हुए व्यक्ति के अपने साथ समाहित होने के उत्सव में शरीक थे।

मेरे इस फेसबुक पेज पर जो टिप्पणियां थी उनमें से एक संलग्न कर रहा हूं जो उनके पूरे व्यक्तित्व को प्रकट करती है :

''शरद यादव जी आज के मानक के नेता नहीं थे वगरना वे सत्ता के साथ समझौते के आफर को रिजेक्ट करके अपने लिए सुख सुविधाओं की किल्लत आमंत्रित नहीं करते। एक बार उन्होंने ऐसा किया भी था अटल जी के प्रभाव में आकर। किंतु उन्हें जल्दी ही अहसास हो गया था कि यह रोड तो भारत के सर्वनाश की ओर जाती है। वे अपनी छवि के डैमेज को रिकवर करने में कामयाबी की ओर तेजी से बढ़ रहे थे किन्तु स्वास्थ्य ने साथ नहीं दिया। एक साहसी एवं सामाजिक न्याय के अनवरत योद्धा को शानदार पार्लियामेंटेरियन एवं भारत के पूर्व उड्डयनमंत्री के रूप में कृतज्ञ राष्ट्र की विनम्र आदरांजलि। उनके साथ मेरी व्यक्तिगत मुलाक़ात एवं वैचारिक आदान प्रदान पर फिर कभी अभी तो उन्हें विनम्र आदरांजलि!!!''

- ***बी. आर. विप्लवी (आईई एस भारतीय रेल सेवा के प्रमुख पद से सेवानिवृत्त के साथ कवि गजलगो साहित्यकर्मी सहित बहुजन चिंतक)***

एक बात विचलित कर रही थी पूरे जीवन उन्होंने जिस पाखंड के खिलाफ खुल करके बोला, उन्हीं पाखंडीयों की परंपरा के नाम पर मैं भीतर से बहुत कमजोर महसूस कर रहा था एक ऐसे महापुरुष को उनके आसपास के लोग नहीं समझ पाए। हो ना हो कल वह जरूर समझें जो व्यक्ति अपनी इस मिट्टी से जुड़ा रहना चाहता था, उसके लोग उनसे क्यों नहीं जुड़ पाए।

सादर नमन... अलविदा...। ▪

राजनीति के कबीर थे शरद यादव

उ.प्र. में 2013 में आयोग में आरक्षण आंदोलन के दौरान मुलाकात करते हुए

शरद यादव से मेरी पहली मुलाकात 2013में उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग मे त्रिस्तरीय आरक्षण आन्दोलन मे होने वाली महापंचायत मे उन्हें शामिल होने के लिए बुलावा पत्र सौपने इनके दिल्ली सरकारी आवास पर हुई थी।

शरद यादव का नाम राष्ट्रीय स्तर पर तब चर्चा में आया जब 1974 में जबलपुर में हुए लोकसभा के उपचुनाव में उन्होंने विपक्ष के साझा उम्मीदवार के रूप में कांग्रेस के दिग्गज नेता गोविंद दास को चुनाव हराया ।

शरद जी जबलपुर विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष के रूप में देश के छात्र एवं युवा आंदोलन का एक बड़ा और अगुआ चेहरा बन चुके थे। और उनके जुझारुपन व बेबाक भाषण शैली से पूरे देश के छात्र नौजवान प्रभावित भी हुआ था। जब 1982 में वह हमारे गृह जनपद अमेठी लोकसभा सीट से तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के खिलाफ चुनाव लड़े तब पूरे देश के छात्रनेता अमेठी आकर शरद जी का चुनाव प्रचार किए थे पूरे देश के युवाओं को उनके राजनीतिक साहस को दाद देते थे।

शरद यादव इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल में जेल में रहे और बाद में उनके वारिस और पुत्र राजीव गांधी के खिलाफ चुनाव लड़े और 1989 में राजीव गांधी के खिलाफ बने विपक्षी गठबंधन के शिल्पकारों में वह प्रमुख थे, लेकिन यह भी एक हकीकत है कि बतौर प्रधानमंत्री वह सबसे ज्यादा इंदिरा गांधी को पसंद करते थे। यह

डॉ. लाल रत्नाकर
मो.न.- +91 98105 66808

बात तब उन्होंने कही थी जब खुद अटल बिहारी वाजपेई की सरकार में मंत्री थे। पत्रकारों नें उनसे पूछा था कि आपने इतने प्रधानमंत्रियों की सरकारें देखी हैं, आप किसे सबसे बेहतर मानते हैं। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी।फिर पत्रकारों ने कहा कि आप तो कांग्रेस विरोध की राजनीति की उपज हैं और इंदिरा गांधी के आपातकाल में आप जेल में रहे। उन्होंने कहा कि वह हमारा राजनीतिक विरोध था। लेकिन इंदिरा गांधी जितनी संवेदनशील नेता थीं, वैसा दूसरा कोई नहीं है।

उन्होंने बताया कि जब वह 1974 में पहली बार लोकसभा में आए तब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं। संसद सत्र के दौरान मैं रोज अखबारों में छपी दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों पर हमले और उत्पीड़न की खबरें शून्य काल में उठाता था। सदन स्थगित होते ही इंदिरा जी मुझे अपने चैंबर में बुला लेतीं और वह सारी जानकारी लेती थीं। अगले दिन संसद सत्र शुरु होने से पहले मेरे पास उन मामलों में क्या कार्रवाई की गई या की जा रही है इसकी पूरी जानकारी प्रधानमंत्री कार्यालय से आ जाती थी। शरद जी ने कहा कि ऐसी तत्परता और संवेदनशीलता मैंने किसी दूसरे प्रधानमंत्री में नहीं देखी।

कांग्रेस के खिलाफ विपक्षी गठबंधन का तानाबाना बुनने वाले नेताओं में अग्रणी थी

कांग्रेस के खिलाफ विपक्षी गठबंधन का तानाबाना बुनने वाले नेताओं में अग्रणी थे। अपने सियासी सफर में उन्होंने मधु लिमये, जॉर्ज फर्नांडीस, राजनारायण, चौधरी देवीलाल, हेमवती नंदन बहुगुणा, विश्वनाथ प्रताप सिंह और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे नेताओं के साथ काम किया। मुलायम सिंह यादव, नीतीश कुमार, सत्यपाल मलिक, के.सी.त्यागी, रामविलास पासवान, मोहन प्रकाश, लालू प्रसाद यादव शिवानंद तिवारी जैसे कई नेता किसी न किसी मोड़ पर शरद यादव के साथ रहे।

शरद यादव न सिर्फ कबीर को सबसे बड़ा सुधारक मानते थे, बल्कि उन्हें राजनीति का कबीर भी कहा जा सकता है। वह ऐसे विरले नेताओं में थे जो तीन राज्यों मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार से चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंचे। वह लंबे समय तक संसद के दोनों सदनों में रहे। केंद्रीय मंत्री रहे लेकिन उनके ऊपर किसी तरह का कोई आरोप विवाद या दाग नहीं लगा। जिस दल में वह रहे वहां उनका दबदबा रहा और पद से लेकर टिकट बंटवारे तक उनकी चली। लेकिन किसी ने भी कभी यह नहीं कहा कि उन्होंने बदले में कोई लाभ लिया हो। उनका यह कबीरपन जब वह मंत्री थे तब भी वैसा ही रहा और जब वह राजनीति के हाशिए पर चले गए तब भी बना रहा।

जब वह नागरिक उड्डयन मंत्री थे तब कुछ लोग कोई प्रस्ताव लेकर आए और उन्होंने बातचीत में दो तीन बार कहा कि अगर उनका यह प्रस्ताव मान लिया जाए तो वह शिकागो अमेरिका में एक बड़ा कार्यक्रम करेंगे जिसमें बतौर मुख्य अतिथि नागरिक उड्डयन मंत्री शरद यादव को बुलाएंगे। एक दो बार शरद जी ने इसे अनसुना कर दिया लेकिन जैसे ही तीसरी बार यह बात कही गई शरद यादव उखड़ गए। तेज आवाज में बोले कि ये बार-बार शिकागो और अमेरिका की रट क्यों लगा रहे हो। गांधी और माओ कितनी बार शिकागो गए थे। इसके साथ ही उन्होंने उन लोगों को बाहर कर दिया। उनकी पहली विदेश यात्रा तब हुई जब उन्हें विमान अपहरण कांड में रिहा कराए गए कुछ यात्रियों को लेने दुबई जाना पड़ा था। इसके बाद वह कभी नेपाल के सिवा कभी विदेश नहीं गये उन्हें न विदेश यात्रा से मोह था और न ही अन्य विदेशी प्रलोभनों से। वह अपनी बेबाकी के लिए जाने जाते थे। इसलिए उन्हें राजनीति में कबीर जैसा माना जा सकता है।

शाम को ही पत्रकारों को मिलने के लिए बुलाते थे

शरद यादव की एक आदत थी कि वह दोपहर को खाना खाने के बाद दो घंटे की नींद जरूर लेते थे। चाहे राजनीति और देश में कैसा भी माहौल हो शरद जी दोपहर की नींद नहीं छोड़ते थे। इसलिए अक्सर वह मिलने वालों को शाम को पांच बजे के बाद ही बुलाते थे। पत्रकारों शिकायत भी करते थे कि वह शाम की जगह हमें दिन में क्यों नहीं बुलाते। इसलिए कभी-कभी वह पत्रकारों को दोपहर के भोजन पर भी बुला लेते थे। लेकिन वह अपने दैनिक कार्यक्रम में अमूमन फेरबदल नहीं करते थे। शरद जी की बातचीत में राजनीतिक गतिविधियों से लेकर वैचारिक मुद्दों पर भी वह अपनी बेबाक राय रखते थे।

सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता में कोई नरमी कभी नहीं आई

मीडिया और राजनीति में सवर्ण वर्चस्व को लेकर वह कई बार काफी तल्ख हो जाते थे, लेकिन व्यावहारिक राजनीति में वह किसी एक जाति के पक्ष में कभी नहीं रहे। सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में कोई नरमी कभी नहीं आई लेकिन उन्हें धुर जातिवादी नहीं कहा जा सकता। विश्वनाथ प्रताप सिंह पर मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के लिए दबाव बनाने वालों में शरद यादव प्रमुख नेता थे। रिपोर्ट लागू होने के बाद शरद यादव जी बिहार से मंडल रथ लेकर पूरे उत्तर भारत की यात्रा की थी जिसमें उन्हें बहुत ही कठिनाई का समाना करना पडा था आरक्षण के सवाल पर जगह जगह सभा के दौरान उनकी सभाओ पर हमला पत्थर बाजी की जाती थी लेकिन शरद जी निर्भिक होकर लडते रहे बिहार से उत्तर प्रदेश हरियाणा होकर दिल्ली में एक विशाल रैली को संम्बोधित किया था उस समय के सभी समाजवादी नेता उस रैली में उपस्थित हुए थे।

जनता दल में फूट होने पर वह देवीलाल के साथ नहीं गए जबकि जनता दल बनने से पहले वह देवीलाल के साथ लोकदल में थे। जब लोकसभा में एक वोट से अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार गिरी तब शरद यादव ने भी उनके खिलाफ वोट दिया था।

एनडीए में शामिल होकर वाजपेयी सरकार में मंत्री बने

लेकिन लोकसभा चुनाव में वह भी एनडीए में शामिल होकर वाजपेयी सरकार में मंत्री बन गए। उनके इस विरोधाभास पर जब सवाल पूछा गया तो उनका जवाब था कि जिस गठबंधन में वह जार्ज फर्नांडीस, रामविलास पासवान, नीतीश कुमार जैसे सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्ष सोच वाले नेता और तेलुगु देशम, डीएमके, टीएमसी जैसे दल होंगे, तब भले भाजपा उस गठबंधन सरकार की अगुआई करे, लेकिन वह अपना सांप्रदायिक कट्टरवादी एजेंडा लागू नहीं कर सकेगी। उनका कहना था कि इसीलिए हमने एनडीए का नेशनल एजेंडा बनाया है और अगर भाजपा उससे पीछे हटी तो हम उसे चलने नहीं देंगे। संसद में जब वह बोलते थे तो सरकार और विपक्ष किसी को भी नहीं छोड़ते थे। कभी-कभी तो मंत्री रहते हुए कुछ ऐसा बोल जाते थे जिससे सरकार के लिए उलझन पैदा हो जाती थी। लेकिन शरद यादव सच कहने में कभी नहीं चूके चाहे संसद हो या सड़क। संसद से सड़क तक आम आदमी वंचित तबकों, दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों की लड़ाई लड़ने वाले शरद यादव को विनम्र श्रद्धांजलि। ▪

चौधरी संदीप सिंह यादव
मो.न.- +91 98105 66808

स्मृतिशेष मुलायम सिंह देश के दूसरे सर्वोच्च सम्मान पद्मविभूषण से सम्मानित

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर पद्म पुरस्कारों का ऐलान किया गया। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव को मरणोपरांत को देश के दूसरे सर्वोच्च सम्मान पद्मविभूषण से सम्मानित किया जाएगा।

सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने इसे नेताजी का अपमान बताया है।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने नेताजी को पद्म विभूषण दिए जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, "भारत सरकार ने नेताजी मुलायम सिंह यादव को मरणोपरांत पद्म विभूषण पुरस्कार देकर, नेताजी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं राष्ट्र के प्रति किए गये योगदान का उपहास उड़ाया है। यदि नेताजी को सम्मान देना ही था तो भारत रत्न के सम्मान से सम्मानित करना चाहिए था।" ▪

क्या होगा हमारा ?

उत्तराखंड के हल्द्वानी में भारतीय रेल के स्वामित्व वाली जमीन पर एक 'जनहित' के नाम पर एक याचिका दायर की गई थी कि रेलवे की जमीन का अतिक्रमण हुआ है, जिसमे उत्तराखंड हाई कोर्ट के एक निर्णय के कारण हल्द्वानी शहर के करीब 4 हजार से अधिक परिवारों के लगभग पचास हजार लोग आज विस्थापन के कगार पर हैं। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले मे संजीदगी दिखाते हुए फरवरी में अगली सुनवाई तक लोगों के घरों को ध्वस्त कर देने के हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी है। मामला हल्द्वानी जिले के गफ़ूर बस्ती का था, जिसमें मुसलमानों की संख्या निस्संदेह अधिक है, लेकिन इलाके में तो अनेक मंदिर और गुरुद्वारे भी हैं। ये लगातार गृह कर, पानी शुल्क, बिजली बिल आदि का भुगतान कर रहे हैं। हल्द्वानी मे जिन बस्तियों को उजड़ने की बात हो रही है, उसमें बहुत से लोग 1907 के बसे हैं। इन बस्तियों में सरकारी बैंक, इंटर कॉलेज और अन्य संस्थान भी बने हुए हैं प्रश्न उठता है यदि यह भूमि के वाशिंदे गैर कानूनी हैं तो इन क्षेत्रों में सरकारी प्रतिष्ठान कैसे बना दिए गए? ▪

क्या होगा तुम्हारा?

24 जनवरी को हिंडनबर्ग रिसर्च ने अडानी ग्रुप पर एक रिपोर्ट पेश किया था। इस रिपोर्ट ने पूरी दुनिया में हलचल मचा कर रख दी. उस दिन से आज तक संसद से लेकर सड़क तक बस इसी रिपोर्ट की चर्चा हो रही है।

हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद से अडानी के शेयरों में काफी गिरावट आई है और इस ग्रुप की मार्केट वैल्यू भी बेहद गिर गई है। हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद गौतम अडानी की संपत्ति में भारी गिरावट देखने को मिली। इतना ही नहीं, इस गिरावट के बाद गौतम अडानी पहले मुकेश अंबानी से संपत्ति के मामले में पीछे हुए, फिर वो टॉप 10 की लिस्ट से बाहर हो गए।

पिछले साल सितंबर में गौतम अडानी की संपत्ति 151.2 अरब डॉलर थी। वो दुनिया के दूसरे और एशिया के सबसे अमीर शख्स बन गये थे। ताजा आंकड़ों के अनुसार अब अडानी संपत्ति 59 अरब डॉलर तक पहंच गई है। मतलब पिछले छ महीने में अडानी की संपत्ति में 91 अरब डॉलर से अधिक की गिरावट हुई है इसमें से ज्यादातर नुकसान पिछले दस दिनों में हुआ है।

हिंडनबर्ग ने अपनी रिपोर्ट में गौतम अडाणी समूह पर स्टॉक्स में हेरफेर और अकाउंटिंग फ्रॉड का आरोप लगाया है। ▪

भारत जोड़ो यात्रा

कांग्रेस नेता राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो' यात्रा कन्याकुमारी से शुरू हुई श्रीनगर में खत्म हो गई। राहुल गांधी अपनी इस भारत जोड़ो यात्रा के दौरान 12 राज्यों और दो केंद्रशासित प्रदेशों से होते हुए गुजरे। राहुल गांधी ने अपनी 'भारत जोड़ो यात्रा' को लेकर कहा कि उनकी ये यात्रा बेरोजगारी, महंगाई, नफरत, हिंसा आदि समाज को तोड़ने वाले कारकों के खिलाफ है।

अपनी इस पूरी यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने 3,570 किलोमीटर की दूरी पैदल ही तय की। भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी पूरे समय खबरों में बने रहे। कांग्रेस की इस यात्रा को जबरदस्त जन समर्थन मिला। बेरोजगारी, महंगाई, नफरती माहौल से त्रस्त जनता ने राहुल गांधी को हाथों हाथ लिया।

भारत जोड़ो यात्रा में धर्मनिरपेक्षता, भारत के संविधान के प्रति सम्मान, नागरिकों के बीच एकता और नफरत विरोधी नारे दिए गए. यात्रा में बेरोजगारी और महंगाई से संबंधित नारे भी लगे। भाजपा ने पिछले कुछ समय में राहुल गांधी की छवि को जो नुकसान किया है, ये मार्च उसका मुकाबला करने में भी मदद कर रही है। राहुल गांधी जिन इलाकों से गुजरे हैं, वहां उनकी लोकप्रियता आसमान छू रही है। 'सभी धर्मों और भाषा के लोगों का इस यात्रा में शामिल होना काफी दिलचस्प था। ▪

मुग़ल गार्डन अब अमृत गार्डन

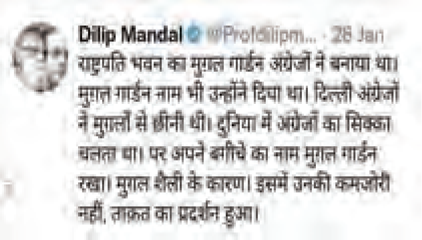
Dilip Mandal @Profdilipm... · 26 Jan
राष्ट्रपति भवन का मुग़ल गार्डन अंग्रेजों ने बनाया था। मुग़ल गार्डन नाम भी उन्होंने दिया था। दिल्ली अंग्रेजों ने मुग़लों से छीनी थी। दुनिया में अंग्रेजों का सिक्का चलता था। पर अपने बगीचे का नाम मुग़ल गार्डन रखा। मुग़ल शैली के कारण। इसमें उनकी कमज़ोरी नहीं, ताक़त का प्रदर्शन हुआ।

अंग्रेजों ने राष्ट्रपति भवन के मुगल गार्डन को बनवाते हुए कतई यह नहीं सोचा होगा की स्वत्रन्त्र भारत में मुगल गार्डन के नाम पर राजनीती होगी। राष्ट्रपति भवन में स्थित मुग़ल गार्डन के निर्माण में मुगलों का कोई हाथ नहीं था। अंग्रेज चाहते तो किसी मुगल गार्डन का नाम किसी अंग्रेज के नाम पर भी कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। मुगल वास्तुकला से प्रेरित होने के कारण इसका नाम अपने दुश्मन के सम्मान में मुग़ल गार्डन ही रखा। अंग्रेजों ने दरियादिली दिखाते हुए इस बगीचे का नाम तो मुगल गार्डन रख दिया लेकिन स्वत्रन्त्र भारत की एक लोकतांत्रिक व्यवस्था से चुनी गई सरकारी ने इसके नाम को परिवर्तित करते हुए इसका नया नाम अमृत गार्डन कर दिया। अब मुग़ल गार्डन, अमृत गार्डन के नाम से जाना जाएगा।

ब्रिटिश राज में इस गार्डन का दीदार केवल खास लोगों को नसीब होता था। ब्रिटिश शासक अपने गेस्ट्स को इस गार्डन की सैर पर ले जाते थे। आज़ादी के पश्चात् 26 जनवरी 1950 को जब भारत में गणतंत्र स्थापित हुआ, डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारत का राष्ट्रपति बनाया गया। वायसराय हाउस का नाम बदलकर राष्ट्रपति भवन कर दिया गया। इसी के साथ ही मुगल गार्डन देखने की 'आजादी' सबको दी गई। तब से लेकर आज तक हर साल बसंत ऋतु में मुग़ल गार्डन को आम लोगों के लिए खोला जाता है।

आरएलडी अध्यक्ष जयंत चौधरी ने ट्वीट कर लिखा, "ऐसे ही देखना है हर चीज़ को तो फिर ये भवन ही गुलामी का प्रतीक है।" कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद ने ट्वीट किया, "राष्ट्रपति भवन भी नया बना दो, ये भी अंग्रेजों ने बनवाया था।" वहीं बसपा सुप्रीमों मायावती ने भी इस पर सवाल उठाते हुए पूछा है कि राष्ट्रपति भवन के मशहूर मुगल गार्डेन का नाम बदलने से क्या देश के करोड़ों लोगों की समस्याएं दूर हो जाएंगी। मायावती ने ट्वीट किया है कि कुछ मुट्ठीभर लोगों को छोड़कर देश की समस्त जनता जबरदस्त महंगाई, गरीबी व बेरोजगारी आदि के तनावपूर्ण जीवन से त्रस्त हैं, जिनके निदान पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय धर्मान्तरण, नामान्तरण, बायकाट व नफरती भाषणों आदि के जरिए लोगों का ध्यान बांटने का प्रयास घोर अनुचित व अति-दुःखद है। राष्ट्रपति भवन के मशहूर मुगल गार्डेन का नाम बदलने से क्या देश व यहाँ के करोड़ों लोगों के दिन-प्रतिदिन की ज्वलन्त समस्यायें दूर हो जाएंगी। वरना फिर आम जनता इसे भी सरकार द्वारा अपनी कमियों व विफलताओं पर पर्दा डालने का प्रयास ही मानेगी। ▪

***बसावन इंडिया राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका** का संचालन सहकारिता के आधार पर किया जा रहा है। पत्रिका को आकर्षक और गुणवत्तापूर्ण बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। संपादक मंडल की हर संभव कोशिश है कि खबरों को निष्पक्ष और तथ्यपूर्ण तरीके से पाठकों तक पहुंचाया जाए। यदि फिर भी कहीं कोई कमी रह जाती है तो हम अपने सम्मानित पाठकों से आशा करते हैं कि वे हमारा ध्यानकर्षण करेंगे। साथ ही साथ हम आपके लेख और विचारों का basavanindi@gmail.com पर स्वागत करते है। बसावन इंडिया की कोशिश होगी कि वह आपके लेख और विचार संपादन के बाद प्रकाशित करें। यदि जगह के अभाव और मुद्दों के प्राथमिकता में आपके विचार और लेख छूट जाते हैं तो उसे अगले अंक में लेनें की हमारी पूरी कोशिश रहेगी। आपकी प्रतिक्रिया का हमें इंतजार रहेगा।*

आजमगढ़ का खिरिया बाग आन्दोलन

फोटो सौजन्य : राजेश यादव

आजमगढ़ जिले की मंदुरी हवाई पट्टी के विस्तारीकरण को लेकर जिले के खिरियाबाग में चल रहे आन्दोलन को तीन महीने से अधिक बीत गया। आंदोलनकारी अपने जमीन और घर बचने के लिए जनवरी की कड़ाके की ठंड और बरसात में भी धरना स्थल पर डटे रहे।

ध्यातव्य है कि उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में लगभग नौ गांवों को उजाड़कर केंद्र सरकार एयरपोर्ट का विस्तारीकरण करना चाहती है। केंद्र सरकार की इस योजना से करीब सत्ताईस हजार लोग विस्थापित हो जाएंगे। सरकार मंदुरी हवाईपट्टी को अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाने के लिए लगभग 670 एकड़ जमीन ग्रामीणों से अधिग्रहण करना चाहती है। इसके लिए वर्ष 2022 के मध्य से ही जिले के प्रशासनिक अधिकारियों ने इस प्रोजेक्ट पर काम करना शुरू कर दिया। अक्टूबर, 2022 को बगैर किसी पूर्व सूचना के प्रशासनिक महकमा भारी पुलिस बल के साथ गांवों में सर्वेक्षण के लिए गया, तब जद में आनेवाले सभी नौ गांवों के लोगों ने सरकार के इस फैसले को मानने से इनकार कर दिया। ग्रामीणों द्वारा भूमि अधिग्रहण का विरोध किया तो पहले प्रशासन द्वारा उनके ऊपर बल प्रयोग किया गया। इस क्रम में उनके ऊपर लाठीचार्ज किया गया। पुलिस ने आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे राजीव यादव को धरना स्थल से उठा लिया था। आंदोलन को धार देने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर, किसान नेता राकेश टिकैत और सामाजिक कार्यकर्त्ता संदीप पांडेय आन्दोलन को अपना समर्थन देने पहुंचे थे। ▪

बीबीएयू में अंबेडकर स्टेचू पर माल्यार्पण न किए जाने पर विवाद

▪ रिपोर्ट- संतोष कुमार, बीबीएयू

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में स्थित बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय (बीबीएयू) के संघमित्रा महिला छात्रावास में 26 जनवरी को सरस्वती पूजा के दौरान कुछ छात्राओं ने अंबेडकर के स्टेचू पर माला नहीं पहनाई और अपशब्द कहे। इस बात पर एक दलित छात्रा ने आपत्ति की। जिसके विरोध में कई छात्र प्रदर्शन पर बैठ गए। विश्वविध्यालय की मास कम्युनिकेशन विभाग छात्रा इंजी० स्नेहा ने कहा कि "कहने को तो हमारा देश एक स्वतंत्र और गणतांत्रिक देश है लेकिन आजादी एक खास वर्ग के लिए नहीं है। 26 जनवरी 2023 के ही दिन बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी में एक दलित बच्चे के साथ जाति सूचक शब्द का प्रयोग किया गया और उसी दिन एक छात्रा के साथ भी वही बर्ताव हास्टल में किया गया। जब एक विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं में इस तरह का बर्ताव और व्यवहार होता है तो गांव और देहात में आप अनुमान लगा सकते हैं क्या होता होगा जो विश्वविद्यालय खासकर समाज के वंचित और पिछड़ों के लिए बनाया गया है वहां भी एबीवीपी के छात्रों की ऐसी मानसिकता वाले लोग है जो उनको दबा के रखना चाहते हैं और उन पर अपना हुकुम चलाना चाहते हैं।"

इस घटना को लेकर बीबीएयू के छात्र- छात्रों ने विश्वविध्यालय कैम्पस में जुलुस निकलकर विरोध प्रदर्शन किया। ▪

बीबीएयू में प्रदर्शन

चमत्कारों की आंधी में सुहानी आई रे...

अंधविश्वास, असुरक्षा और पाखंड का भारत में एक बहुत बड़ा बाजार है, जिसके फलने फूलने से देश में एक बड़े वर्ग की रोजी रोटी चलती है, मीडिया, मंदिर, ओझा - सोखा, जादू-टोना, जादू टोना, कीमती पत्थरों के व्यवसायी, भविष्यवक्ता और वशीकरण विशेषज्ञो की तो रोजी रोटी इसी पर निर्भर करती है। पेपर का क्लासिफाई विज्ञापन देख कर आप इस दावे की पुष्टि कर सकते हैं।

भारतीय मीडिया का अपना एक अलग ही चेहरा है। देश की मूल समस्याओं से इतर मीडिया हिंदुत्व का एजेंडा सेट करने में लगा है। हाल ही में लांच हुए बागेश्वर बाबा के नाम से प्रसिद्ध पं.धीरेंद्र शास्त्री की असीमित चमत्कारी शक्तियों में देश की मूल समस्सयों का हल ढूंढ निकला अन्य समस्याएं गौड़ हो गई। टी वी पर पं.धीरेंद्र शास्त्री की चमत्कारी शक्तियों पर घंटों घंटों की बहस हो रही है, पं.धीरेन्द्र शास्त्री को हिंदुत्व का पर्याय मान के रूप में स्थापित करने के लिए एंकर दिन रात गला फाडे हुए हैं, सच कहें तो मीडिया चमत्कारों के आसरे हो गया है।

मध्य प्रदेश के छतरपुर में बागेश्वर आश्रम के 26 वर्षीय पंडित धीरेंद्र शात्री दिव्य दरबार लगा कर चमत्कारिक तरीके से लोगों की समस्याओं का समाधान करने का दावा करते हैं। हाल ही महाराष्ट्र के नागपुर के कार्यक्रम में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की सक्रियता के चलते पंडित बागेश्वर शास्त्री को नागपुर का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा। महाराष्ट्र में अंधविश्वास से संबंधित कठोर कानून है, जिसकी वकालत वहां के एक प्रमुख संगठन अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति लगातार करता रहा है। पंडित धीरेन्द्र शात्री बाला जी और हनुमान से सीधे सीधे संपर्क में होने का दावा करते हैं, साथ ही साथ भूत प्रेत बाधा निवारण का दावा भी करते है इस प्रकार की गतिविधियों

ओमनाथ बिंद
नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता

"भारतीय संविधान में साफ तौर पर समाजवादी, लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों की बात कही गई है। अनुच्छेद 51 (अ) में वैज्ञानिक चिंतन को बढ़ावा देना और तर्क और मानववादी सोच को आगे बढ़ाने की बात कही गई है। आज से 10 वर्ष पूर्व तक बाबा गण केवल अपनी धार्मिक बातों को रखते थे और सावधान रहते थे कि संविधान के विरुद्ध कोई बात न हो, लेकिन आज तो सभी खुले तौर पर घृणा फैला रहे हैं और नफरत की भाषा बोल रहे हैं। इसी प्रकार की नफरती भाषा के चलते नरेंद्र दाभोलकर, गोविंद पानसरे और गौरी लंकेश जैसे लोगों की हत्या हुई, जो प्रेम की भाषा बोल रहे थे। बाबाओं से जब चमत्कारिक शक्तियों के बारे में सवाल किया जाता है तो कह दिया जाता है कि दूसरे धर्मो के विषय में सवाल क्यों नहीं उठाया जाता? यह बिल्कुल वैसा ही जैसे कोई आज कश्मीर के सवाल पर या चीन द्वारा भारतीय जमीन को हथियाने के सवाल पर बात करें तो उसे केंद्र सरकार व भाजपा के द्वारा नेहरू के ऊपर सवाल उठाने को कहा जाएगा। ऐसे ही आज यदि दलित जातिभेद व उत्पीड़न का शिकार होता है तो पूरी दुनिया में रंगभेद का सवाल उठाने की बात कही जाती है।"

के लिए मध्य प्रदेश मुफीद जगह हैं। जहाँ अशिक्षा,अन्धविश्वास और गरीबी के चलते बाबाओं की दुकान चल जाती है साथ ही साथ मध्य प्रदेश सरकार की पेंशन योजना के कारण वहां ऐसे बाबाओं की पौ बारह है।

बागेश्वर धाम के पंडित धीरेन्द्र शास्त्री के खिलाफ नागपुर में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की तरफ से जो शिकायत दर्ज कराई गई थी उस मामले में पुलिस ने एफआईआर दर्ज नहीं की है और मामले की जांच चल रही है। समिति के उपाध्यक्ष श्याम मानव ने शास्त्री पर अंधविश्वास फैलान का आरोप लगाया है। उनका आरोप है कि बाबा झूठे चमत्कार के नाम पर लोगों की भावनाओं के साथ खेल रहे हैं। समिति का आरोप है कि दरबार की आड़ में धीरेंद्र शास्त्री 'जादू-टोना' करते हैं।अखिल भारतीय अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के उपाध्यक्ष श्याम मानव ने उन्हें चुनौती दी थी, जिसमें कहा गया था कि अगर वे ऐसा करके दिखाएं तो 30 लाख रुपये दिए जाएंगे। नागपुर से चुनौती मिलने के बाद उन्हें रायपुर से भी चुनौती मिलने लगी। छत्तीसगढ़ तर्कशील परिषद के संरक्षक रमेश कुमार ने पंडित धीरेंद्र शास्त्री को को अपने मंच पर आमंत्रित किया हैं।

भारत की पहली महिला जादूगर सुहानी शाह वो सब कुछ करती हैं जो पंडित धीरेन्द्र शास्त्री करते हैं शिवानी शाह एक कलाकार हैं और वे इसे एक कला मानती हैं वे किसी चमत्कार का दावा नहीं करती हैं और न ही वे किसी दिव्य शक्ति के संपर्क में हैं। देश भारत में जहां चमत्कार के नाम पर अंधविश्वास के नाम पर अनगिनत अपराध लूट कसोट और भी बहुत सी घटनाओं को अंजाम दिया जाता है वैसे में सुहानी शाह के इस पोल खोल से धीरेन्द्र शास्त्री के दावे पर पानी फिर जाता है।

सुहानी शाह बतौर एक कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करती है देश और देश के बाहर उन्होंने करीब 5000 से अधिक शो किए हैं लेकिन सुहानी शाह को प्रसिद्धि पंडित धीरेंद्र शास्त्री के चमत्कारी शक्तियों के दावे के बाद ही मिल पाई। सुहानी शाह चांदी को आसानी से

रमेश कुमार
संरक्षक, छ.ग. तर्कशील परिषद्

" हमारी संस्था किसी धर्म और आस्था के खिलाफ नहीं हैं, उनको हमारे मंच पर आ कर प्रदर्शन करना चाहिए जहाँ एसपी, कलेक्टर के एक-एक प्रतिनिधि, तीन एडवोकेट, तीन तर्कशील परिषद् के सदस्य, तीन विज्ञानं के प्रोफ़ेसर,एक पत्रकार उपस्थित रहें एंव हमारे द्वारा नियुक्त व्यक्ति का नाम पता उसकी समस्या महाराज जी बताएं। ऐसे कार्यक्रम होने से समाज को लाभ मिलेगा छुपे हुए अपराधियों का पता पुलिस को लग सकता है, साइबर क्राइम की जानकारी तत्काल मिल सकती है, उक्त कार्यक्रम का खर्च हमारी समिति करेगी।"

"सुहानी माता" बनकर अपने पीछे अंध भक्तों की एक बड़ी फौज रख सकती थी लेकिन सुहानी शाह इसे बतौर एक कला और खुद को एक कलाकार के रूप में ही पेश किया जिसके लिए सुहानी शाह बधाई के पात्र हैं। सुहानी शाह ए टी एम का पिन, नाम आदि बताने का कार्यक्रम का प्रदर्शन करती हैं, कुछ लोगों का कहना है कि सुहानी शाह के जादू का राज उनकी स्लेट में है, लेकिन कोई भी कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए किसी न किसी वैज्ञानिक ट्रिक का ही इस्तेमाल करता है, ऐसी ट्रिक जो जनसामान्य में प्रचलन में नहीं होती है। यह मनोरंजन मात्र का साधन है। ▪

डॉ.नरेश कुमार साहू
मो.न.- 9921110844

जातीय जनगणना रिपोर्ट

नगर परिषद् डुमरांव वार्ड संख्या - 35, बक्सर, बिहार

बसावन इंडिया अपने प्रवेशांक से ही देश में जाति आधारित जनगणना का मुद्दा उठा रही है, बसावन इंडिया के जाति आधारित जनगणना की मुहीम रंग लायी, आज देश में जाति आधारित जनगणना की मांग जोर शोर से उठाने लगी है। बिहार में जाति आधारित जनगणना का काम शुरू भी हो गया है। जनगणना तो वैसे केंद्र का विषय है लेकिन कुछ विशेष प्रावधानों के साथ साथ राज्य भी जनगणना करवा सकते हैं। बिहार की जाति आधारित जनगणना का स्वागत किया जाना चाहिए। शीघ्र ही जाति आधारित जनगणना के नतीजे सामने होंगे और विभिन योजनाओं का लक्षित लाभ उन वर्गों को मिल सकेगा जो देश के स्वतंत्रता के सात दशक बीत जाने के बाद भी हासिये पर रहे।

इसी कड़ी में बसावन इंडिया अपने इस अंक के लिए बिहार के बक्सर जिले के एक नगर परिषद् की जनगणना का प्रकाशन कर रही है। बसावन इंडिया ने अब तक उत्तर प्रदेश के नौ जिलों के नौ ग्रामसभा की जनगणना का प्रकाशन किया है। इस बार की जातीय जनगणना की रिपोर्ट हमे बिहार के बक्सर से नगर परिषद् डुमरांव वार्ड संख्या- 35 के अनुरूप बलबीर ने भेजी है। जिसकी संख्या एक लाख से ऊपर हैं, इतनी बड़ी संख्या की गणना अपने व्यक्तिगत साधनों से करना एक बहुत कठिन कार्य है इसलिए आकड़ों में थोड़ा विचलन संभव है।

जातीय जनगणना के लिए हम गांव की नवीनतम निर्वाचन सूची को आधार बनाते है, उसी गांव के किसी व्यक्ति द्वारा जातियों को चिन्हित कर जातिवार आंकड़ों को प्रस्तुत करते हैं। यदि आप अपने गांव की जनगणना रिपोर्ट का प्रकाशन चाहते हैं तो नवीनतम मतदाता सूची को आधार बनाकर बसावन इंडिया को मेल कीजिए। बसावन इंडिया की संपादकीय टीम यदि आपके गांव की रिपोर्ट का चयन करती है तो सिटिजन जर्नलिस्ट के रूप में आपको क्रेडिट देते हुए आपके फोटो के साथ आपका नाम मैगजीन में प्रकशित किया जाएगा।

बिहार की बक्सर जिले की डुमरांव नगर पालिका परिषद में 26 जातियां के मतदाताओं की संख्या 105770 है। जिसमे सवर्ण जातियों के चार मतदाताओं ब्राहमण, क्षत्रिय,कायस्थ और भूमिहार को मिला कर मतदाताओं की संख्या 9992 है। डुमरांव नगर परिषद में पिछड़ा और अति पिछड़ी जातियों संख्या 16 है। जिसमे अहीर, कोइरी, कुर्मी, सुनार, वैश्य मल्लाह, गड़ेरिया, कोंहार, कहार, नोनिया, भर, नाई, तेली, बढ़ई, लोहार, तुरहा शामिल हैं। इन जातियों के मतदाताओं की संख्या 59394 है। डुमरांव नगर परिषद में 6 अनुसूचित जातियो के साथ साथ गोंड अनुसूचित जनजाति भी है। अनुसूचित जातियों में चमार दुषाध, मुसहर,डोम,धोबी और पासी शामिल हैं। अनुसूचित जातियों के मदाताओं की संख्या 13302 है। अनुसूचित जनजाति के 2980 मतदाता हैं, जो गोंड जनजाति से हैं। मुस्लिम समाज के 22102 मतदाता है। जिसमें सामान्य और पिछड़े दोनों शामिल है। ▪

अनुरूप बलबीर
मो.न.- 9065431702

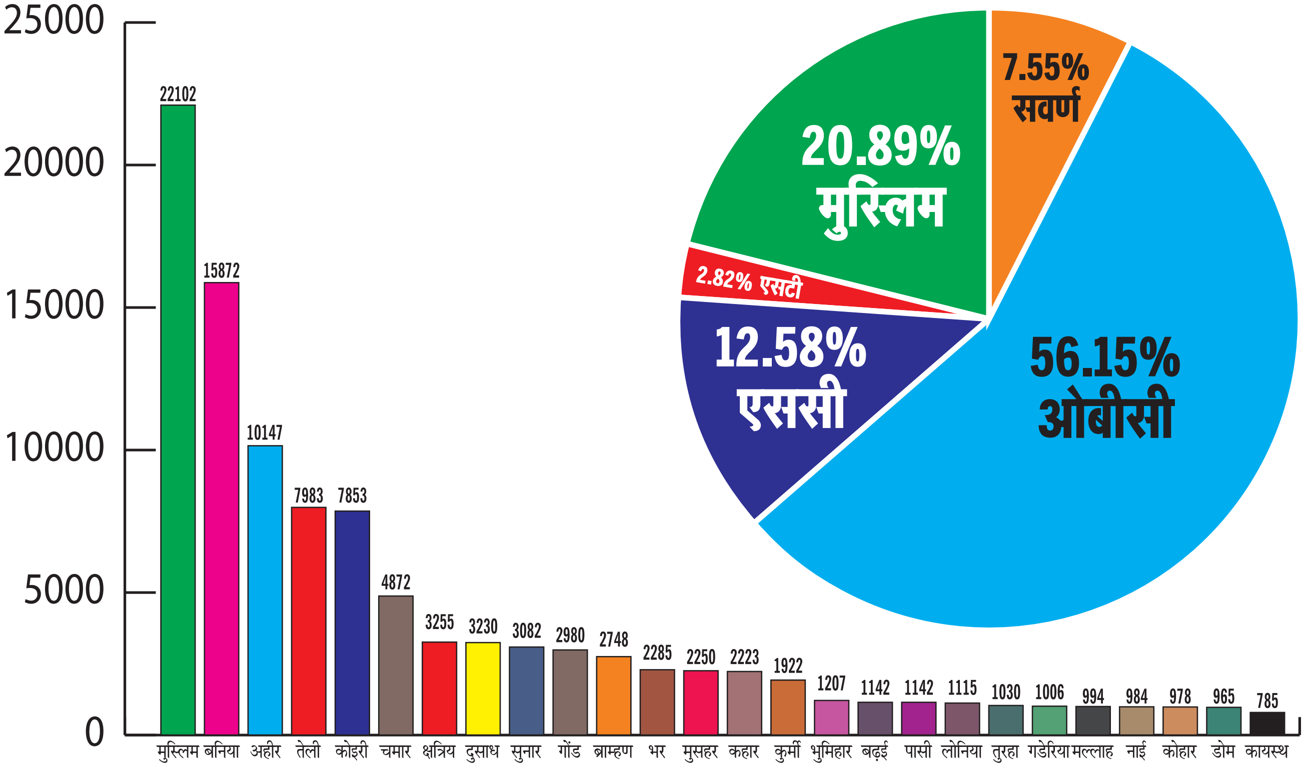

नगर परिषद् डुमरांव वार्ड संख्या - 35, बक्सर बिहार

बसावन इंडिया मंडल ऑडिट

थानाध्यक्ष/प्रभारी निरीक्षक, पुलिस कमिश्नरेट प्रयागराज

▪ बसावन इंडिया डेस्क

संविधान लागू होने के साथ ही देश में दलितों के लिए आरक्षण लागू हो गया था, मंडल कमीशन को लागू हुए भी लगभग 20 साल से अधिक हो चुके हैं। सरकारी सिस्टम में अभी भी दलितों-पिछड़ों की भागीदारी नहीं हो पाई है। देश के विभिन्न संस्थानों में विभिन्न जातियों की भागीदारी क्या है,इसको लेकर बसावन इंडिया मंडल ऑडिट नाम तथ्य परक और शोधपरक सामग्री को देशवासियों के समक्ष प्रस्तुत कर रही है।

जिसमें विभिन्न संस्थानों प्रत्येक अंक में किसी न किसी संस्था में कार्यरत कर्मियों की जातिवार गणना का प्रकाशन करेगी।

बसावन इंडिया में इस बार की गणना के लिए उत्तर प्रदेश के प्रयागराज कमिश्नरेट के विभिन्न थानों के थानाध्यक्ष और प्रभारी निरीक्षकों की शोधपरक ऑडिट प्रस्तुत किया जा रहा है। आपका सुझाव और सहयोग आपेक्षित है, जिससे हम शोधपरक पत्रकारिता का नमूना पेश कर सकें ।

पिछले वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रयागराज में भी पुलिस की कमिश्नरी प्रणाली लागू कर दिया। कमिश्नरी

थानेदारी में हिस्सेदारी - प्रयागराज कमिश्नरेट

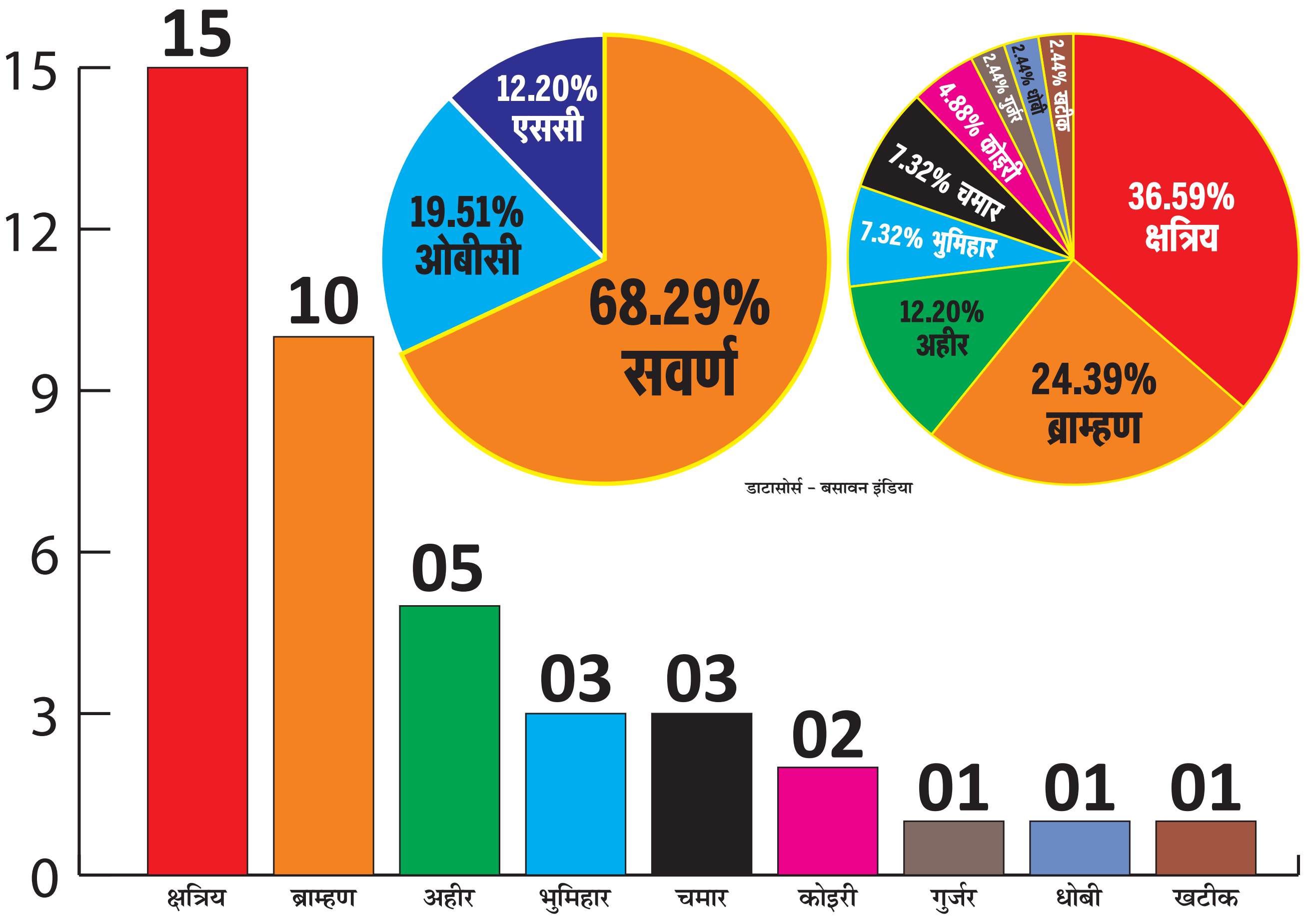

डाटासोर्स - बसावन इंडिया

नाम	थाना अध्यक्ष/ प्रा.नि.	जाति
श्री अश्वनी कुमार सिंह	शाहगंज	क्षत्रिय
श्री उपेन्द्र प्रताप सिंह	पूरामुफ़्ती	क्षत्रिय
श्री योगेश प्रताप सिंह	अतरसुइया	क्षत्रिय
श्री धीरेन्द्र सिंह	जार्जटाउन	क्षत्रिय
श्री वैभव सिंह	झूसी	क्षत्रिय
श्री यशपाल सिंह	फूलपुर	क्षत्रिय
श्री सुरेश सिंह	मऊआइमा	क्षत्रिय
श्री अनूप सिंह	नबाबगंज	क्षत्रिय
श्री अमित कुमार सिंह	होलागढ़	क्षत्रिय
श्री आशीष सिंह	फाफामऊ	क्षत्रिय
श्री रमेश कुमार सिंह	बहरिया	क्षत्रिय
श्री बृजेश सिंह	नैनी	क्षत्रिय
श्री विश्वजीत सिंह	करछना	क्षत्रिय
श्री धीरेन्द्र कुमार सिंह	कोरांव	क्षत्रिय
श्री मनोज कुमार सिंह	शंकरगढ़	क्षत्रिय
श्री लोकेन्द्र त्रिपाठी	थरवई	ब्राह्मण
श्री अनुराग शर्मा	खुल्दाबाद	ब्राह्मण
श्रीमती पूनम देवी शुक्ला	महिला थाना	ब्राह्मण
श्री आशीष कुमार चौबे	मुट्ठीगंज	ब्राह्मण
श्री मनीष कुमार त्रिपाठी	शिवकुटी	ब्राह्मण
श्री वीरेंदर कुमार मिश्र	दारागंज	ब्राह्मण

नाम	थाना अध्यक्ष/ प्रा.नि.	जाति
श्री धर्मेन्द्र कुमार दुबे	हंडिया	ब्राह्मण
श्री तरूणेन्द्र त्रिपाठी	सरायममरेज	ब्राह्मण
श्री संजीव कुमार चौबे	औधोगिक क्षेत्र	ब्राह्मण
श्री ज्ञानेश्वर मिश्र	मेजा	ब्राह्मण
श्री राम मोहन राय	कर्नलगंज	भूमिहार
श्री अरविन्द कुमार राय	सरायइनायत	भूमिहार
श्री मुदित राय	कोतवाली प्रभारी	भुमिहार
श्री रामाश्रय यादव	करेली	ओबीसी अहीर
श्री वीरेन्द्र यादव	सिविल लाइंस	ओबीसी अहीर
श्री रूकुमपाल सिंह	कैंट	ओबीसी अहीर
श्री राममूर्ति यादव	कीडगंज	ओबीसी अहीर
श्री शेर सिंह यादव	लालापुर	ओबीसी अहीर
श्री राजेश कुमार मौर्य	धूमनगंज	ओबीसी कोइरी
श्री बीरेन्द्र कुमार कुशवाहा	कौंधियारा	ओबीसी कोइरी
श्री अश्वनी कुमार	धूरपुर	ओबीसी गुर्जर
श्री अरविन्द कुमार गौतम	मंडा	अनुसूचित जाति चमार
श्री अनिल कुमार	बारा	अनुसूचित जाति चमार
श्री श्रवण कुमार	उतरांव	अनुसूचित जाति चमार
श्री अशोक कुमार	सोरांव	अनुसूचित जाति कन्नौजिया
श्री वीरेन्द्र कुमार सोनकर	खीरी	अनुसूचित जाति खटीक

डाटासोर्स - बसावन इंडिया

सिस्टम लागू किए जाने के बाद प्रयागराज के पुलिस थानों में किस जाति के थानाध्यक्षों/प्र.नि. कितनी भागीदारी है इसका आडिट बसावन इंडिया ने किया है, लगभग तीन महीने की लगातार कठिन परिश्रम के पश्चात् बसावन इंडिया ने ईमानदारी से आकड़ों को इकठ्ठा करने का कठिन प्रयास किया हैं, आकड़ों के संकलन में पूरी ईमानदारी बरती गई है फिर भी आंकड़ों थोड़ी बहुत मानवीय चूक हो सकती है।

प्रयागराज कमिश्नरेट सिस्टम के अंतर्गत जिले के 41 थानों में सबसे अधिक संख्या मुख्यमंत्री के सजातीय अर्थात क्षत्रियों की है। प्रयागराज के विभिन्न थानों में कुल 15 क्षत्रिय थानाध्यक्ष तैनात हैं। 36.59% थानाध्यक्ष क्षत्रिय हैं। इसके बाद की संख्या दूसरे पर ब्राहमण हैं जिनकी संख्या 10 है, कुल थानेदारों का एक चौथाई (24.39%)ब्राहमण हैं। तीसरे नंबर पर अहीर थानेदार है जिनकी संख्या 5 है जो कुल थानेदारों का 12.20% है, जिले के तीन भूमिहार, तीन चमार और दो कोइरी जाति से आते हैं इसके आलावा एक गुर्जर, एक धोबी, एक खटीक जाति के थानेदार हैं। प्रयागराज जिले के 41 थानेदारों में 28 सवर्ण हैं। 68% थानेदार तीन सवर्ण जातियों क्षत्रिय, ब्राहमण और भूमिहार वर्ग से आते हैं। ओबीसी वर्ग से आने वाले थानेदारों की संख्या 8 है, जिसमे ओबीसी की तीन जातियां अहीर कोइरी और गुर्जर शामिल हैं। जो लगभग 20% है शेष पांच थानेदार अनुसूचित जाति से हैं, जिसमे अनुसूचित जाति वर्ग की तीन जातियां जिसमें चमार, धोबी, खटीक है। 12% थानेदार अनुसूचित जाति के हैं। थानेदारों की सूची में एक भी मुसलमान नहीं है।▪

बिहार में जाति जनगणना का पहला चरण समाप्त

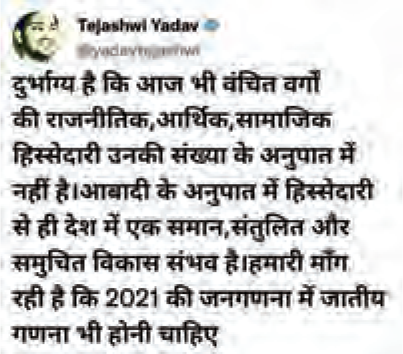

▪ बसावन इंडिया डेस्क

बिहार में भी सात जनवरी से जनगणना शुरू हो गई है, बिहार में जाति गणना का पहला चरण जिसमें घरों की गिनती होनी थी, समाप्त हो चुका है और दूसरा चरण आरंभ होने वाला है। पहले चरण की सफलता बड़ी उपलब्धि है। दूसरा चरण काफी महत्वपूर्ण है, इसमें जाति के अलावे सामाजिक और आर्थिक स्थिति की गणना होनी है।

लंबे समय से हो रही है मांग- विभिन्न राजनीतिक दलों ने जातीय जनगणना की लंबे समय से मांग की जा रही थी। राजनीतिक दलों का कहना है कि इससे दलित, पिछड़ों की सही संख्या मालूम चलेगी और उन्हें इसके अनुसार आगे बढ़ाया जा सकेगा। जातीय जनसंख्या के अनुसार ही राज्य में योजनाएं बनाई जाएंगी। इसके लिए 18 फरवरी 2019 और फिर 27 फरवरी 2020 को बिहार विधानसभा और विधान परिषद में जातीय जनगणना कराने से संबंधित प्रस्ताव पेश किया गया था। बिहार सरकार ने 2 जून 2022 को जातिगत सर्वेक्षण को मंजूरी दे दी थी,इस सर्वेक्षण में 12.7 करोड़ जनसंख्या, 2.58 करोड़ घरों को कवर किया जाएगा जो 31 मई 2023 को पूरा होगा। जातिगत सर्वेक्षण 38 ज़िलों में कराया जाएगा। इन ज़िलों में 534 ब्लॉक्स और 261 शहरी स्थानीय निकाय हैं। गणना कार्य में लगे सभी कर्मचारी एक-एक घर में जाकर एक-एक चीज की जानकारी लेंगे।

बाधित करने का प्रयास- जाति जनगणना को अभिजात्य वर्ग के लोगों द्वारा तरह-तरह की प्रतिक्रिया आ रही है। पूरी कोशिश है कि किसी तरह इसे बाधित किया जाए। बिहार सरकार द्वारा जाति जनगणना के इस निर्णय को कुछ भाजपा परस्त संगठन एवं व्यक्तियों ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने यह कहते हुए उनकी अर्जी पर विचार करने से इंकार कर दिया कि अगर जाति की सही गणना ही नहीं होगी तो अलग-अलग सामाजिक समूहों के लिए आरक्षण का सही-सही निर्धारण कैसे किया जाएगा? कोर्ट के इस निर्णय से भाजपा बैकफुट पर आ गई है।

नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार

> “बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि जाति आधारित गणना से समाज के सभी वर्गों को लाभ होगा और इस कवायद का उद्देश्य वंचित लोगों के लिए विकास कार्य करने का है, लोगों की आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलने से उनके विकास के लिए योजनाएं शुरू करने में मदद मिलेगी और इससे लोगों को फायदा मिलेगा तथा क्षेत्र का विकास होगा। सिर्फ जाति की गणना नहीं हो रही है, लोगों की आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण भी किया जाएगा।”

इस मुद्दे पर बिहार भाजपा के अलग-अलग नेताओं के अलग-अलग बयान दर्शाते हैं कि वह कितनी असहज है? कोई इसका श्रेय लूट रहा है तो कोई इसे जातिवाद फैलाने वाला कृत्य बतला रहा है। सुशील कुमार मोदी का बयान है कि बिहार में जाति गणना का निर्णय एनडीए सरकार ने लिया था। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष संजय जायसवाल का जोर है कि इस गणना में बिहार की उप जातियों की भी गणना की जाए और नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा का तर्क है कि इससे जातिवाद को बढ़ावा मिलेगा।

बिहार के डिप्टी सीएम और राजद नेता तेजस्वी यादव ने कहा है कि जाति भारतीय समाज की एक सच्चाई है। उन्होंने कहा कि पूर्वाग्रह त्याग अगर कोई जाति आधारित गणना से जुटाए गए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण आंकड़ों के इन लाभों पर चिंतन करेगा, तो उसे निःसंदेह ही इसके सकारात्मक प्रभावों को समझने में देर नहीं लगेगी। भाजपा राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए ही इस जनहित के कदम के विषय में भ्रम पैदा कर रही है। जातीय गणना को तर्क संगठत ठहराते हुए उन्होंने कहा कि यह सब जानते हैं कि भारतीय समाज में एक व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति व प्रगति में उसकी जाति का असर कमोबेश रहता है। अगर जाति के आधार पर पिछड़ापन आया, तो पिछड़ेपन का निदान भी जाति के आधार पर आंकड़े जुटा कर ही किया जा सकता है। तेजस्वी ने कहा कि इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जाति भारतीय समाज की कड़वी सच्चाई है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद के नेतृत्व में राजद, जदयू और सपा ने संयुक्त रूप से तत्कालीन मनमोहन सरकार पर दबाव बना कर जाति आधारित आंकड़े जुटवाए थे, लेकिन बीजेपी सरकार ने उन आंकड़ो को प्रकाशित नहीं होने दिया। ▪

बस्ती : बौद्धों की बसावट

▪ **बसावन इंडिया डेस्क**

बौद्ध काल में बस्ती में लुम्बिनी कुशीनगर कौशाम्बी और साकेत के केन्द्रीय भाग के रूप में यह एक बौद्ध बस्ती के के रूप में बसा जो आज भी बस्ती कहा जाता है। देश के हिंदी भाषी ग्रामीण क्षेत्रो में आज भी दलित पिछड़ी जातियों के बसावट को बस्ती के नाम से जाना जाता है। बस्ती एक जंगल था, अधिकतर क्षेत्र जंगल होने के कारण यह प्राकृतिक चारागाह भूमि रहा होगा जो भैंस, भेड़ बकरियों के पालन के लिए अनुकूल रहा होगा। अवध की अधिक से अधिक भाग पर राजभरों का कब्जा था। राजभरों के मूल और इतिहास के बारे में कोई विशेष शोध कार्य नहीं हुआ है, परन्तु व्यापक भारशिव (राजभरों)के राज्य के सबूत के रूप में प्राचीन ईंट इमारतों के खंडहर लोकप्रिय है जो जिले के कई गांवों में बहुतायत संख्या में फैले है। बस्ती जिला भार, थारू, दोमे और दोमेकातर जैसे आदिवासी जनजातियों का क्षेत्र था। जिले में स्थित नागर गांव की पश्चिम दिशा में विशाल झील चंदू ताल स्थित है। यह मछली पकड़ने और निशानेबाज़ी करने के लिए प्रसिद्ध है।मत्स्यायन क्षेत्र होने के नाते इस बात की प्रबल सम्भावना है कि बस्ती जिले की बसावट में भरों का बहुत बड़ा योगदान रहा होगा

अकबर और उनके उत्तराधिकारी के शासनकाल के दौरान जिला बस्ती, अवध सुबे के गोरखपुर सरकार का एक हिस्सा बना हुआ था। जौनपुर के गवर्नर के शासनकाल के शुरू के दिनों में यह जिला विद्रोही अफगानिस्तान के नेताओं जैसे अली कुली खान, खान जमान का शरणस्थली था। 1680 में मुगल काल के दौरान औरंगज़ेब ने एक दूत (पथ के धारक) काजी खलील-उर-रहमान को गोरखपुर भेजा था शायद स्थानीय प्रमुखों से राजस्व का नियमित भुगतान प्राप्त करने के लिए। खलील-उर-रहमान ने ही गोरखपुर से सटे जिलो के सरदारों को मजबूर किया था कि वे राजस्व का भुगतान करे। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि अमोढ़ा और नगर के राजा, जो हाल ही में सत्ता हासिल की थी, राजस्व का भुगतान को तैयार हो गये और टकराव इस तरह टल गया। इसके बाद खलील-उर-रहमान ने मगहर के लिए रवाना हुआ जहाँ उसने अपनी चौकी बनाया तथा राप्ती के तट पर बने बांसी के राजा के किले पर कब्ज़ा कर लिया। नव निर्मित जिला संत कबीर नगर का मुख्यालय खलीलाबाद शहर का नाम खलील उर रहमान से पडा जिसका कब्र मगहर में बना है। उसी समय एक प्रमुख सडक गोरखपुर से अयोध्या का निर्माण हुआ था 1690 फ़रवरी में, हिम्मत खान (शाहजहाँ खान बहादुर जफर जंग कोकल्ताश का पुत्र, इलाहाबाद का सूबेदार) को अवध का सूबेदार और गोरखपुर फौजदार बनाया गया, जिसके अधिकार में बस्ती और उसके आसपास का क्षेत्र बहुत समय तक था।

आधुनिक काल

एक महान और दूरगामी परिवर्तन तब आया जब 9 सितम्बर 1772 में सआदत खान को अवध सूबे का राज्यपाल नियुक्त किया गया जिसमे गोरखपुर का फौजदारी भी था। उसी समय बांसी और रसूलपुर पर सर्नेट राजा का, बिनायकपुर पर बुटवल के चौहान का, बस्ती पर कल्हण शासक का, अमोढ़ा पर सुर्यवंश का, नगर पर गौतम का, महुली पर सुर्यवंश का शासन था। जबकि अकेला मगहर पर नवाब का शासन था, जो मुसलमान चौकी से मजबूत बनाया गया था।

नवंबर 1801 में नवाब शुजा उद दौलाह का उत्तराधिकारी सआदत अली खान ने गोरखपुर को ईस्ट इंडिया कंपनी को आत्मसमर्पण कर दिया, जिसमे मौजूद जिला बस्ती और आसपास के क्षेत्र का भी समावेश था। रोलेजे गोरखपुर का पहला कलेक्टर बना था। इस कलेक्टर ने भूमि राजस्व की वसूली के लिए कुछ कदम उठाये थे लेकिन आदेश को लागू करने के लिए मार्च 1802 में कप्तान माल्कोम मक्लोइड ने मदद के लिए सेना बढा दिया था।

बस्ती जिला तमाम ऐतिहासिक तथ्यों को समेटे हुए है, बस्ती जिले के इतिहास को जानना और समझना है तो अविभाजित बस्ती सिद्धार्थ नगर और संत कबीर नगर जिले के साथ समझना पड़ेगा। सिद्धार्थ नाम से बस्ती जिले की महात्मा बुद्ध से सम्बन्ध स्थापित होता है। चूँकि बुद्ध से जुडा स्थल होने के कारण बस्ती जिले को ब्रहामंवादी विचारको के द्वारा

शेष पेज नं. 31 में ...

जिला बस्ती का शहीद स्मारक

अनीश यादव: छोटी उम्र के बड़े लेखक

प्रिंसपल फादर थामस के साथ

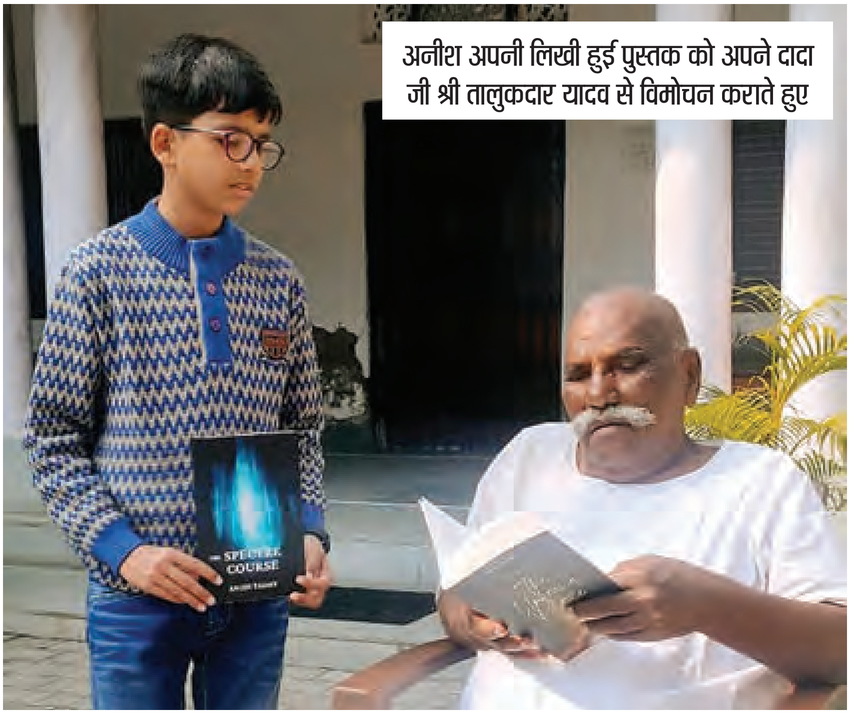
अनीश अपनी लिखी हुई पुस्तक को अपने दादा जी श्री तालुकदार यादव से विमोचन कराते हुए

▪ **बसावन इंडिया डेस्क**

जिस उम्र में लोगों सपना चाँद- तारों के बीच जाने का, हवाई जहाज उड़ने का, इंजिनीयर या डाक्टर बनाने का, उसी उम्र के अनीश यादव लेखक बनने का सपना पाले हुए हैं। अपने सपने को हकीकत में बदलने के लिए अनीश कदम भी बढ़ा चुके हैं। उन्होंने लगातार दो किताबों की रचना की है, अपने नाम के अर्थ के अनुरूप वे लगातार बिना रुके तीसरी किताब की रचना में व्यस्त हैं। अनीश यादव दोनों किताबें अमेजन पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। जल्दी ही उनकी तीसरी किताब मार्केट में उपलब्ध होगी जिसके लेखन में वे आज कल व्यस्त हैं। अनीश ने अपनी पुस्तक 'द स्पेक्ट्रे कोर्स (The Spectre course) को कक्षा पाचवीं में और 'द अननोन प्लेस' (The unknown Place) को कक्षा छठवीं में लिखा था। प्रयागराज के सेंट जोसेफ कॉलेज के प्रिंसिपल फादर थॉमस कुमार ने बताया कि अनीश एक उभरता हुआ लेखक है। उसकी दोनों किताबें 'द अननोन प्लेस' और 'द स्पेक्ट्रे कोर्स कॉलेज की लाइब्रेरी में भी रखी गई है।

अनीश को एडवेंचरस कहानियां के लेखन में रूचि है। उनकी दोनों किताबों का केन्द्रीय बिंदु एडवेंचर ही हैं। अनीश का लेखन के आलावा किताबें पढ़ना, फुटबाल खेलना और संगीत में रूचि है। अनीश के पसंदीदा लेखकों में जे के रोलिंग का नाम सबसे ऊपर हैं। अनीश अपने साथियों कुलदीप, उत्कर्ष, देव और आदित्य के साथ खेलना नहीं भूलते हैं। अनीश पियानो बजने में भी रूचि रखते हैं। ▪

कबीर निर्वाण स्थली मगहर

पेज नं.-30 का शेष...

इसे बहुत हीन क्षेत्र माना। बस्ती क्षेत्र के बारे में भ्रांतियां फैलाई गई ,ऐसी मान्यता हो गई कि यहाँ मरने वाला नर्क में जाता है जिसे कबीर ने चुनौती दी। कबीर के बारे में बारे में कहा जाता है सब दिन काशी मरत के मगहर। यहाँ कबीर स्वंय चल कर आये थे या काशी के पंडितों के द्वारा भगाए गए थे? यहाँ आ कर स्वाभाविक मौत मरे थे या मार दिए गए थे यह शोध का विषय है।

1865 में बस्ती जिला मुख्यालय बना। 1988 में बस्ती के उत्तरी हिस्से को अलग कर सिद्धार्थ नगर बना 1997 में बस्ती जिले के पूर्वी हिस्से को अलग कर संत कबीर नगर जिले का निर्माण किया गया।

बस्ती, राष्ट्रीय रूप से बांस, नीलगिरी,आम और शिशम के लिए भी प्रसिद्ध है। जिले में तीन चीनी कारखानों और कई चावल मिल है। गन्ना, मक्का, धान, दालों, गेहूं, जौ और आलू को सामान्यतः खेती की जाती है। 2006 में पंचायती राज मंत्रालय ने बस्ती को देश के 250 सबसे पिछड़े जिलों में से एक (कुल 640 में से)चयनित किया था।बस्ती ज़िला तलहटी - संबंधी मैदान में पूरी तरह से फैला है। ▪

अमर शहीद जगदेव बाबू जयंती विशेष

भारतीय क्रांति का जारी अध्याय

▪ **बसावन इंडिया डेस्क**

अमर शहीद जगदेव बाबू कुशवाहा का जन्म 2 फरवरी, 1922 को बिहार के अरवल जिले के कुर्था प्रखंड के कुल्हारी गाँव में निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। प्राइमरी में शिक्षक पिता के सान्निध्य में उन्होंने पहले पढ़ाई की फिर पटना विश्वविद्यालय में इनका परास्नातक के दौरान मुक्तिगामी विचारधाराओं को समझने, परखने और उसे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अखाड़ों में आजमाने और लागू करने का दौर शुरू हुआ। गौरतलब है कि मुक्तिगामी साहित्य को तो सब पढ़ते हैं, मगर कई पीढ़ियों में कोई बिरला ही जगदेव बाबू जैसा निकलता है जो उसके अमृत को खुद भी पीए और सबको पिलाये भी। उनका जीवन ऐसा लगता है जैसे इस देश के दबे कुचले तबके के लिए रौशनी भी हो और रास्ता भी ।

किसी कुशल चिकित्सक की तरह उन्होंने ये समझ लिया कि इस देश के समाज में समस्या क्या है। सबसे बड़ी समस्या है पाखंड, जिसका सबसे जागृत रूप है - धार्मिक कर्मकांड और अंधविश्वास। आज जब रामचरितमानस को जलाया जा रहा है तो जलाने वाले ये भी दिखा रहे हैं की उसमे नितांत बहुजन और स्त्री विरोधी कथनों का अम्बार लगा है, जिसे बिना समझे ही सदियों से बहुजन समाज तोते की तरह भजन कर रहा है। अपने आस्तिक पिता के अवसान के बाद जगदेव बाबू ने अपने घर में रखी समस्त देवी देवताओं की मूर्ति और तस्वीरों को घर से बहार निकाल कर फेंक दिया। दरअसल मुक्ति की राह में पहला कदम ही अपनी बेड़ियों को तोडना है जो उन्होंने इस कृत्य द्वारा पूरे बहुजन समाज को करके दिखाया। इसी पाखंड के धार्मिक कैंसर से उपजी सामाजिक बिमारी का नाम है - जाति, जिसका एकमात्र उद्देश्य जन्म आधारित भेदभाव को स्थापिक कर नैसर्गिक मानवीय सदभाव को समाप्त करना है ।

धर्म ही इसकी जड़ है और धार्मिक ग्रन्थ ही इसकी गंगोत्री है - ये बात जगदेव बाबू बहुत पहले ही समझ गए और ताउम्र जन्माधारित भेदभाव के ढांचे को चोट पहुंचाते रहे। इसके लिए पहले उन्होंने चपरासी से लेकर राष्ट्रपति की बच्चे की समान शिक्षा की बात की क्यूंकि धर्म ने ही 90 % जाति को शिक्षा से वंचित रखा। अगला मुद्दा इससे जुड़ा है सामंतवाद का, जिसे मार्क्स को ज्यादातर मानने वाले सिर्फ क्लास बताकर इसकी ब्राह्मणवादी जड़ों पर पर्दा दाल देते हैं। दरअसल भूमिहीन या छोटी जोत वाले किसान मजदूर से हज़ारों बीघे का ज़मींदार क्या ही छीन लेगा, पर वो अत्याचार इसलिए करता है ताकि धर्म ग्रंथों से प्राप्त उसकी जातीय श्रेष्ठता का पाखंड बरक़रार रहे। जगदेव बाबू इसलिए ही अपने बचपन से सामंतों का दंभ तोड़ते रहे, और बाद में राजनीती में भी उन्होंने ऐसा काम किया कि आजतक बिहार में कोई भी सामंती जाति का मुख्यमंत्री नहीं बन पाया ।

"अबकी सावन भादो में, गोरी कलईया काधो में" जैसे खूबसूरत नारे जिनमे ये कहा गया कि सामंतो के घर की महिलाएं भी इस मौसम में धान के खेत में काम करेंगी, न सिर्फ सामंती वर्ग के महिलाओं की उस चारदीवारी से मुक्ति की बात है बल्कि उस वर्ग के हृदय में मारा गया एक ऐसा तीर है जो उनके जातीय और धार्मिक श्रेष्ठता में पर्दों को दो फाड़ कर देता है ।

जगदेव बाबू ने दिखाया कि इस सामाजिक संरचना में बहुजन वर्ग के साथ साथ हर महिला भी शोषित है क्यूंकि बिना महिलाओं को गुलाम बनाये धार्मिक और जातीय पाखंड का किला खड़ा नहीं हो सकता। इतिहास भी बताता है कि Hindu Marriage Act, 1955 के पहले हिंदु महिलाओं को तलाक़ के अधिकार नहीं थे और शिक्षा से तो वो वंचित थी हीं। आम जनमानस के आचार-व्यवहार में रामचरितमानस था जिसमे नारी सिर्फ ताड़ना की ही अधिकारी थी। सरल शब्दों में कहा जाए तो जगदेव बाबू के अनुसार धर्मग्रंथों से निकले लैंगिक, सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक असमानता की शिकार गैर सवर्ण जातियां और महिलायें "शोषित" हैं। इसी शोषित वर्ग के लिए उन्होंने लोहिया के 'पिछड़ा पावे सौ में साठ' की बाजीगरी को ठुकराया और नारा दिया कि - "सौ में नब्बे शोषित है, शोषितों ने ललकारा है ; धन धरती और राजपाठ पर नब्बे भाग हमारा है"। ये भारतीय राजनितिक इतिहास का सबसे भव्य और कीमती नारा है और हमारी सबसे बड़ी धरोहर है। ये वो लक्ष्य है जिसे पाने ले लिए स्वयं जगदेव बाबू शहीद हो गए ।

बात 5 सितम्बर, 1974 की है जब राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह के लिए एकत्रित जनसमूह के बीच जातीय और सामंती घृणा से प्रेरित धड़े के एक नुमाइंदे दरोगा ने उन्हें गोली मार दी और पानी मांगने पर उन्हें अपना पेशाब पिलाया। वहां उपस्थित भीड़ ने भी सहिष्णुता दिखाई और दरोगा की मॉब लिंचिंग के बजाये जगदेव बाबू के हत्या के क्रोध को पी गयी। ये सब्र मीठे फल के रूप में दिखा तो की लालू और नितीश के हाथ में सत्ता रही, पर पहली गैर कांग्रेसी सरकार बनाने वाले जगदेव बाबू की बात कालांतर में सत्य साबित हो गयी ।

उन्होंने कहा था - " मैं जिस क्रांति की शुरुआत कर रहा हूँ, उसमे पहले पीढ़ी गोली खाएगी, दूसरी पीढ़ी जेल जाएगी और तीसरी पीढ़ी राज करेगी"। पहली पीढ़ी में तो स्वयं जगदेव बाबू गोली खाकर शहीद हो गए। दूसरी पीढ़ी के लालू, मुलायम, मायावती और नितीश जैसे नेता सत्ता तो पाए पर वो सत्ता केंद्र के बजाये सीबीआई के तलवार के नीचे और सिर्फ राज्य स्तर तक रही। इनके माध्यम से ही धन, धरती और राजपाट का बंटवारा उतना ही हुआ जितना मंदिर में प्रसाद का होता है। लालू का जेल जाना भी बता गया कि ये दूसरी पीढ़ी है जिसकी बात जगदेव बाबू कर रहे थे। सबसे महत्त्वपूर्ण राज करने वाली तीसरी पीढ़ी वो है जो अमर शहीद जगदेव बाबू के रास्ते पर बिना उनके सिद्धांतों पर समझौता किए हुए अभी के दौर में है। उसे ही धन, धरती और राजपाट का आबादी के अनुरूप वितरण करना है। वही गढ़ों और मठों के किलों को तोड़ेगी और पाखंड को समाप्त कर जगदेव बाबू के सपनो को सच करके दिखाएगी। ▪

बच्चों के लिए बस्तर का परम्परागत चूसना

बस्तर के बाजार हाट में घूमते हुए कई बार आपकी नजर इस वस्तु पर पड़ी होगी। मेरी भी पड़ी सोचती थी ये पूजा पाठ या फिर किसी टोटके के लिए उपयोग में लाया जाता होगा। इस बार सोची की इसके असल उपयोग के बारे में जाना जाए। पता चला कि यह बस्तर का पारम्परिक Baby sucker है जिसे pacifier या Soother के नाम से आधुनिक बाजार में जाना जाता है।

बस्तर का चूसना

अंगूठा चूसने की आदत हर बच्चे में प्राकृतिक रूप से आती है। कभी यह बच्चे की भूख का संकेत होती है तो कभी बच्चा ऐसा करने में आराम महसूस करता है। अंगूठा चूसने से एंडोफिन्स नाम के द्रव्य का निर्माण होता है, जिससे शिशु का दिमाग शांत हो जाता है और उसे जल्द नींद आ जाती है।

माना जाता है कि बच्चे अंगूठा चूसने से सुरक्षित और खुशी महसूस करते हैं। साथ ही जब वो थके हुए हों, भूख लगी हो या बोरियत महसूस करते हैं, तो वो खुद को शांत करने या सोने के लिए अंगूठा चूस सकते हैं।

वहीं, एक वैज्ञानिक अध्ययन के मुताबिक बच्चों के अंगूठा चूसने का संबंध शारीरिक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक तनाव से भी जुड़ा हो सकता है। वैज्ञानिक शोध में माना गया है कि बच्चे अपने अंगूठे को मुंह में ट्रिगेमिनल नर्व को उत्तेजित करने के लिए डालते हैं, जो मांसपेशियों के संतुलन को बनाने और तनाव को मुक्त करने में मदद करता है।

हर संस्कृति में बच्चों को इस आदत से दूर करने के लिए अलग अलग उपाय सुझाये जाते हैं जैसे : बच्चा जबअंगूठा चूसने लगे उसके हाथों में दस्ताने पहनाना शुरू करें या आप उसे कोई खिलौना दे सकते हैं। बच्चे को आप पेसिफायर (Pacifier) भी दे सकते हैं। बच्चे के अंगूठे में कुछ कड़वी चीज जैसे नीम का लेप लगा सकती हैं, ताकि वो अंगूठे से आने वाले कड़वे स्वाद की वजह से उसे चूसना छोड़ सकते हैं।

बस्तर के ग्रामीण अंचल में इसका एक अलग ही उपाय है, जो बाज़ारों में उपलब्ध होता है।

लहसुन, अजवाइन, सोंठ और कड़वी जड़ी बूटियों के मिश्रण को कपड़े में लपेट कर पोटली बना ली जाती है और से बच्चे की कलाई में बांध दिया जाता है। बच्चा जैसे ही अपना अंगूठा मुँह में ले जाता है तब यह पोटली उसके मुँह में चली जाती है और कड़वा होने के कारण बच्चा से निकाल देता है।

बहुत सी जड़ी बूटियों का यह मिश्रण न केवल इसे स्वस्थ रखता है वरन ऐसा करने से अंगूठा चूसने की आदत से छुटकारा भी मिल जाता है।

बस्तर क्षेत्र के जगदलपुर जिले की बोदल गांव की निवासी रामवती अपने बच्चे के लिए चूसने का प्रयोग करती हैं, रामवती द्वारा बताया गया कि जंगल जाने के वक्त वह अपने बच्चे के हाथ में चूसनी बांध देती है। ताकि जंगल मे लकड़ी और पत्ता तोड़ते वक्त बच्चा न रोये इस प्रकार वह अपना काम आसानी से कर पाती है और बच्चा दूसरी चीजों को भी मुह में नहीं डालता है खेलते खेलते वह बीच बीच में चुसनी को मुंह में लगा लेता है और फिर से खेलते लग जाता है। समय-समय पर गंदा हो जाने से चूसनी को बदल दिया जाता है। यह चूसनी बस्तर के हर बाजार हॉट में आसानी से मिल जाता है साथ ही उनके बजट में भी होता है। इस चूसनी से अंगूठा चूसने की आदत से भी छुटकारा मिल जाता है। हाथ में बंधे होने की वजह से बच्चे इससे खेलते हुए व्यस्त रहते हैं और माँ को परेशान नहीं करते हैं। ▪

दीप्ति ओग्रे
मो. 9527120550

बदल रहे हैं शोक प्रकट करने के परंपरागत तरीके

तेरहवीं की जगह श्रद्धांजलि सभा

श्रद्धांजलि सभा के दौरान संविधान की शपथ लेते हुए

उत्तर प्रदेश में सामाजिक बदलाव बहुत तेजी से हो रहा है। समाज के प्रगतिशील लोग तेरहवीं की जगह श्रधांजलि सभा करके शोक प्रकट कर रहे है। अब लोगों को इस बात का एहसास हो रहा है कि तेरहवीं एक सामाजिक बुराई है,एक ऐसी सामाजिक कुरीति जिसे न चाहते हुए भी लोग करते हैं, जसमे अपने परिजनों खोने के बाद भी लोग भोज देते हैं। इस कुप्रथा के खिलाफ समाज में समय समय पर आवाजें उठती रही हैं, लेकिन तेरहवीं पूर्ण रूप से बंद नहीं हो सकी। अन्धविश्वास और पाखंड के चलते इसने और भी कुत्सित रूप धारण कर लिया है। समाज में यह स्टेटस सिम्बल के रूप में उभरा है।

हाल ही में जौनपुर जिले के मड़ियाहूं क्षेत्र के हटिया गांव में मृत्यु भोज की जगह श्रधांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में उपस्थित उमेश कुमार ने बताया कि आज से 8 साल पहले हमारे ही एक संबंधी ने अपने माता जी की मृत्यु के बाद श्रधांजलि सभा की थी तब हम लोग उन्हें समझाने गए थे कि आप तेरहवीं कीजिए, तेरहवीं न करने से बहुत निंदा होगी लेकिन अब हमें इस बात का एहसास हो गया कि यह सिर्फ एक पाखंड है और कुछ नहीं। वो हमसे 8 साल आगे चल रहे थे। हमने भी अपनी ताई के निधन के बाद श्रधांजलि सभा का आयोजन किया।

यह तेरहवीं संस्कार समाज के चन्द चालाक लोगों के दिमाग की उपज है किसी भी धर्म ग्रन्थ में मृत्युभोज का विधान नहीं है। तेरहवीं के आयोजन से जहाँ एक स्वदिष्ट पकवान खाने को मिलाता है वहीं दूसरी ओर तर्पण के नाम पर मोटी रकम की वसूली हो जाती है। तेरहवीं करने वाले को इस बात का विश्वास दिला दिया जाता है कि उसके संबंधी उसके द्वारा किया गया आयोजन उसके पुरखों को आनंदित करता है। आज के वैज्ञानिक और तार्किक समय में जब वैज्ञानिक चाँद सितारों तक अपनी पहुंच बना लिए हैं, ये बातें निर्थक हैं। अशिक्षा अन्धविश्वास के चलते ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन अभी भी हो रहा है, तेरहवीं भोज का पूर्ण रूपेण बहिष्कार कर समाज को एक सही दिशा देनी चाहिए।

हमें इस बारे में जानवरों से सीख लेनी चाहिए, जिसका साथी बिछुड़ जाने पर वह उस दिन चारा नहीं खाता है जबकि बुद्धिमान मानव एक आदमी की मृत्यु पर हलवा-पूड़ी खाकर शोक मनाने का ढ़ोंग रचता है इससे बढ़कर निन्दनीय कोई दूसरा कृत्य हो ही नहीं सकता। ▪

मनोज कुमार

श्रद्धांजलि सभा के दौरान कंबल वितरण किया गया

कैसे आ रहा है परिवर्तन

लोगों को तेरहवी न करने के लिए प्रेरित करने वाले शुद्ध विनोद मानव ने बताया की "जब समाज के संभ्रांत लोग किसी परंपरा की शुरूआत करते हैं तो देखा देखी अन्य लोग भी उन्ही परम्पराओं का निर्वहन करते हैं। पिछले वर्ष अक्तूबर में समाजवादी पार्टी के संस्थापक, पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव का निधन हुआ, उनके परिजनों ने तेरहवी नहीं किया, जनवरी 2023 में शरद यादव का निधन हुआ उनके भी परिजनों ने तेरहवीं नहीं किया। जिसका प्रभाव समाज में व्यापक रूप से पड़ा, लोग ने इसे नजीर माना, अब लोग तेरहवी करने से दूर भाग रहे हैं। लेकिन अभी यह समाज के पढ़े लिखे और जागरूक लोगों तक ही सीमित है, धीरे धीरे परिवर्तन आएगा।"

सदस्यता रसीद

पत्राचार का पता : देशराज एडवोकेट, 12बी/284, वृंदावन योजना, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.) प्रतिशत मो.: 9415767238

मैं बसावन इंडिया राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के लिए सदस्यता ले रहा / रही हूं।

श्री / श्रीमती : ....

पता पिन कोड सहित : ....

मोबाईल नं. : .... ईमेल आईडी : ....

नगद राशि शब्दों में : ....

PhonePe
ACCEPTED HERE

☐ वार्षिक ₹ 500/-   ☐ 2 वर्ष ₹ 1000/-   ☐ 5 वर्ष ₹ 2500/-

☐ 10 वर्ष ₹ 5000/-   ☐ आजीवन ₹ 10,000/-

Bank Name	:	State Bank of India Main Branch, Azamgarh (U.P.)
AC Holder Name	:	Basavan India
AC No.	:	40640205456
IFSC Code	:	SBIN0000014

प्राप्तकर्ता का नाम हस्ताक्षर

Rate Card

Ad On Page	Rate	Colour/BW	Print Area
Full Page Front Inside	40,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Full Page Back Cover	40,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Full Page Back In Side	30,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Half Page	20,000/-	Colour	19 cm x 26cm
Half Page	10,000/-	B/W	19 cm x 13cm
Quarter Page	10,000/-	Colour	123.5 Sqm
Quarter Page	5,000/-	B/W	123.5 Sqm
1/8 Page	5,000/-	Colour	61.75 Sqm
1/8 Page	3,000/-	B/W	61.75 Sqm

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : +91 9415767238, +91 9453171770

बसावन नामा

आपके सामने प्रस्तुत है हमारे पिछले अंकों के बारे में हमारे सुधिपाठकों की प्रतिक्रिया जो कि हमारे पास विभिन्न माध्यमों से भेजी गई है।

उपेक्षित समाज की उम्मीद है बसावन इंडिया। पहली बार मैंने इसे अपने एक साथी के हाथ में देखी, बिना पूरा पढ़े मुझसे नहीं रहा गया। एक-एक लेख सोचने को विवश करता है। यह समाज के दलित शोषित, दमित लोगों को आवाज प्रदान करती है, बसावन इंडिया समस्त मानवीय पहलुओं का प्रेरणा स्रोत है। बसावन इंडिया टीम को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

संतोष संघर्षी
प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

राष्ट्रीय फलक पर यह पत्रिका समसामयिक घटना क्रम के साथ ही समाज एंव संस्कृति को लेकर एक शोध मूलक रिपोर्ट पाठकों को उपलब्ध कराती है। इसके लिए बसावन इंडिया टीम को सादर जोहार। उम्मीद करते हैं यह पत्रिका आने वाले समय में भारत की राजनीति, समाज एंव संस्कृति पर अपना अमिट छाप छोड़ेगी।

युवराज सिंह
रायपुर

लंबे अन्तराल के बाद, बसावन इंडिया को पढ़ने पर आत्मिक संतुष्टि मिली। मुख्यधारा की पत्रकारिता से इतर इस पत्रिका में सामाजिक न्याय के पुट विश्वसनीयता के साथ देखने को मिले। पत्रकारिता के क्षेत्र में शानदार दखलंदाजी के लिए संपादक महोदय सहित पूरी टीम को हार्दिक बधाई एंव मंगल कामनाएं

रजनीश कुमार आंबेडकर
वर्धा महाराष्ट्र

नमस्कार सर, आप एक उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। हमारे समाज को आपकी और आप जैसे लोगों की जरुरत है।

– सर्वेश कुमार, लखनऊ

मैगजीन प्राप्ति के लिए संपर्क करें

एडवोकेट देशराज (लखनऊ)
9415767238

परिभाषा (दिल्ली एनसीआर)
8826063330

तेजबहादुर (भोपाल)
9406955327

कृष्णा पैकरा (अम्बिकापुर)
8839884273

संजीत बर्मन (बिलासपुर)
9754737875

कोमल प्रसाद (कुशीनगर)
9565869539

राम सिंह यादव (आजमगढ़)
9415085600, 9454479600

अनिल दीप चौधरी (जौनपुर)
9554687948

प्रमोद कुमार (जौनपुर/खुटहन)
9506473500

प्रदीप चौहान (जौनपुर/सदर)
7985658300

प्रवीन कुमार (गाजीपुर)
9415888054

संजय कुमार (चंदौली)
9415978381

मनोज कुमार (सोनभद्र)
9005800506

विनय कुमार (बलिया)
9415659396

विजय कुमार (वाराणसी)
9506722313

अरविंद कुमार गदर (प्रयागराज झूसी)
7651961448

प्रयागराज में लक्ष्मी चौराहे पर हीना पुस्तक केंद्र पर भी उपलब्ध है।

SWARNIMYUG BUILDERS PVT.LTD.

Iso Certified 9001:2008

8400494555
8400504555
8400888837
8400888842

E-mail: swarnimyugbuilders2021@gmail.com | Web: www.swarnimyug.com

Head Off.: H.No.3, Karampura, 80ft. Road, Yashoda Nagar, Kanpur-11

Sales Off.: 286 Sanigawan Road, Kanpur-208021

हेना पुस्तक केंद्र

कटरा पानी टंकी के पास, लक्ष्मी चौराहा, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

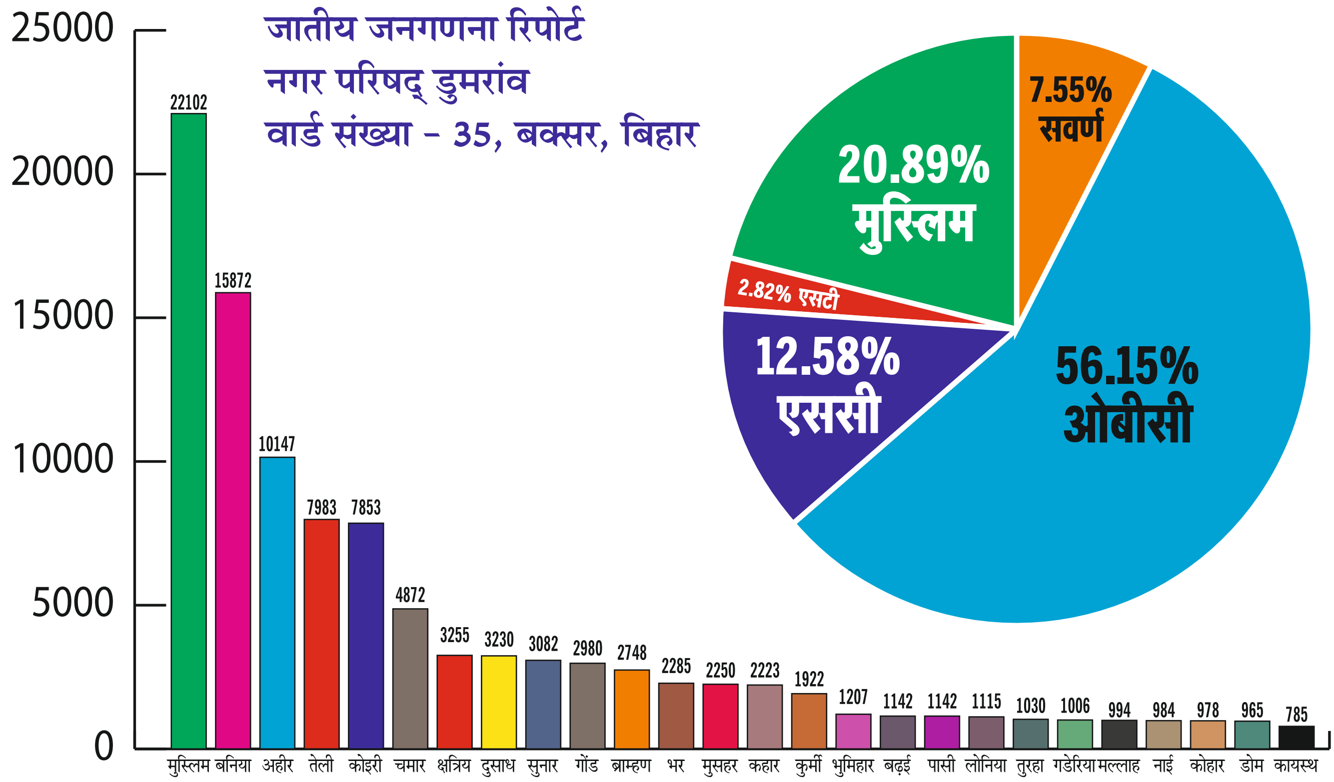

ग्राफ एवं पाई चार्ट के विस्तृत विवरण के लिए पृष्ठ 26 पढ़ें।

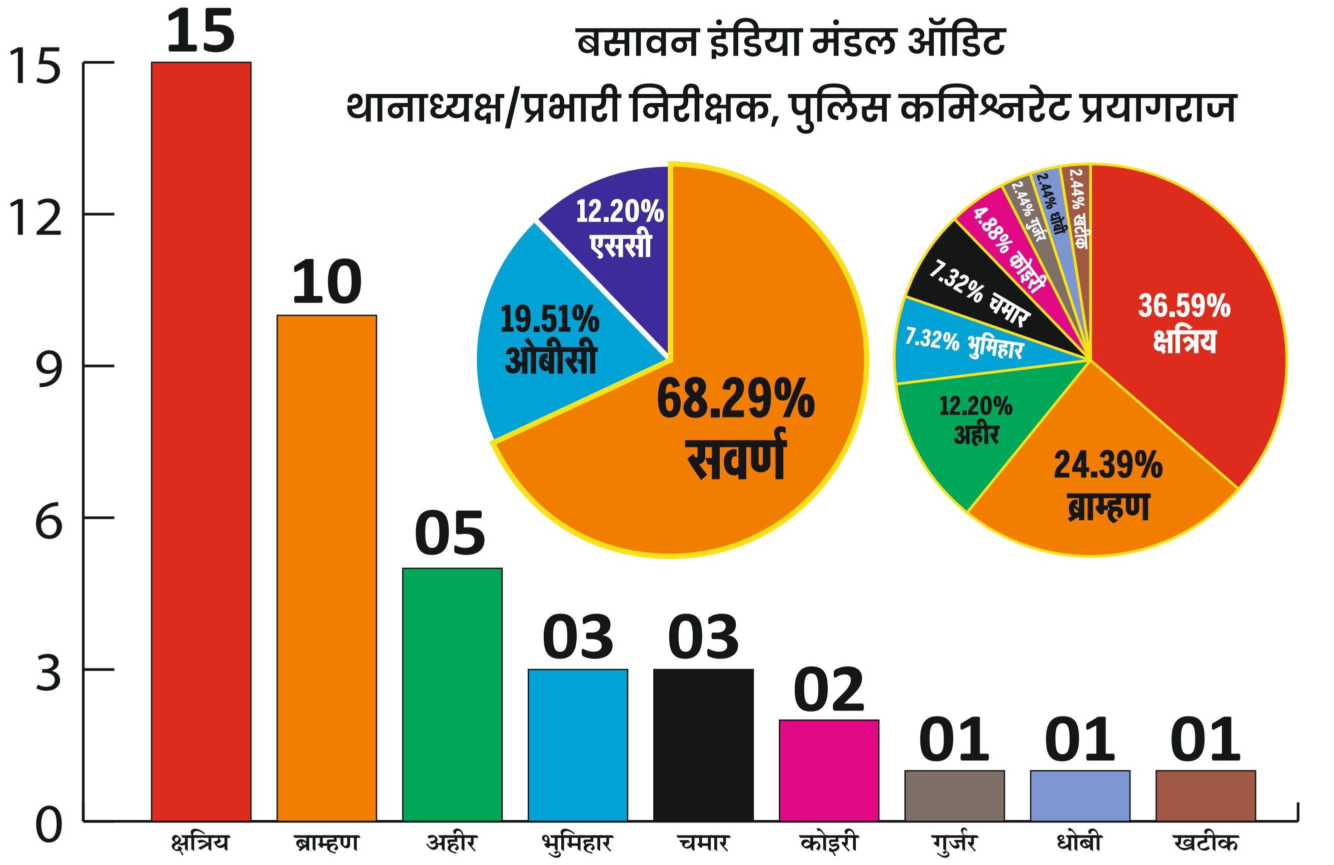

ग्राफ एवं पाई चार्ट के विस्तृत विवरण के लिए पृष्ठ 27 पढ़ें।